मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख ● सलंग अंक १५२ ● डीसम्बर-२०१९

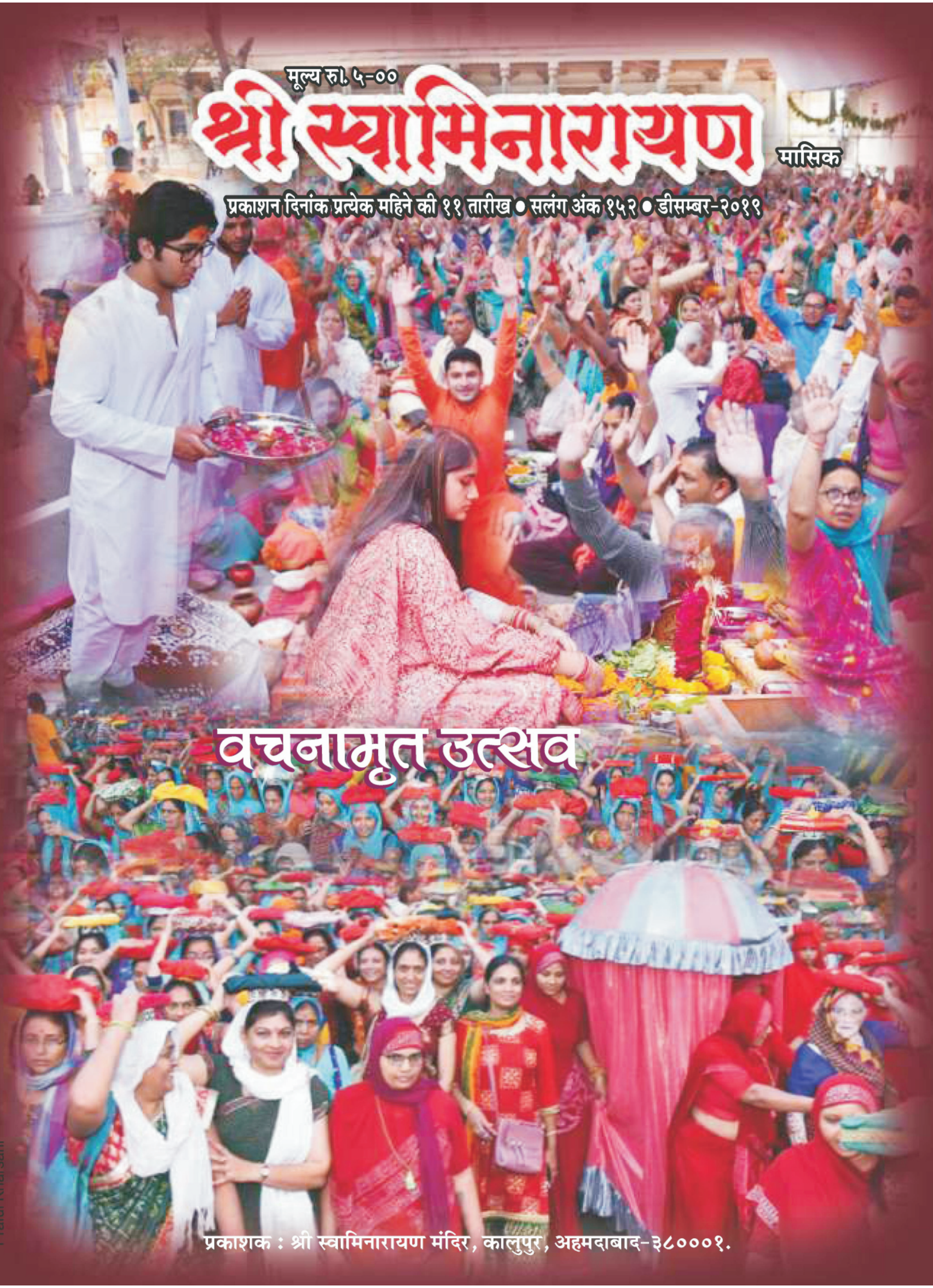

वचनामृत उत्सव

Praful Kharsani

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-३८०००१.

१. श्री स्वामिनारायण बाग से कालुपुर मंदिर की पदयात्रा में प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. अ.सौ. गादीवालाजी हजारों हरिभक्तों के साथ दर्शन देते हुए । २. अहमदाबाद के सभी क्षेत्रों से २५०० जितने ट्राफिक पुलिस को प.पू. लालजी महाराजश्री के संकल्प से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा प्रसाद और पानी का बोतल वितरित किया गया था ।

३. कालुपुर मंदिर के हवेली में नरनारायण द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में नरनारायण की आराधना का लाभ उठाते सत्संगी बहनें और बहनों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलक ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १३ ● अंक : १५२
डिसम्बर-२०१९

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अनुक्रमणिका

०१. अस्मदीयम् ०४
०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५
०३. नागरवेल ०६
०४. पुराण पुरुष हरिकृष्ण का भजन करें ०८
०५. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन १०
०६. सर्वैरपि यथाशक्ति भाव्यं दीनेषु वत्सलैः १२
०७. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १४
०८. सत्संग बालवाटिका १६
०९. भक्ति सुधा १८
१०. सत्संग समाचार २१

अस्मदीयम्

कई जन्मो के पश्चात हम लोगो को यह मूल्यवान मानव रुप में जन्म मिला है । ये भी ऐसे अलौकिक सत्संग में श्रीहरिने हम लोगो को जन्म प्रदान किये है ।

हम लोगो का कितना पुण्य उदय हुआ होगा । तब जाकर भगवान सर्वोपरि श्रीहरि प्राप्त हुए है । हमें यदि भगवान वास्तव में समझमें आ गये हो तो श्रीहरि द्वारा स्वंय लिखित श्रीमद् शिक्षापत्री के प्रत्येक आज्ञा का हम पालन करेगे । इससे अपना ईहलोक और परलोक भी सुधर जायेगा । सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान हम लोगो को अंतकाल के समय अवश्य लेने आयेगे । तथा वे अपने अलौकिक अक्षरधाम का सुख हम लोगो को देगे । इससे अपने जन्म-मरण के चक्कर से दूर हो जायेगे ।

सुखमय शीत काल का आगमन हो चुका है । १६ दिसम्बर से पवित्र खरमास प्रारम्भ हो रहा है । संसार के लोगो के लिये खरमास प्रारम्भ होगा । और भगवान के भक्तो के लिये विशेष भजन-स्मरण करने वाले महीना है ।

प्रात: काल अपने कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का महामंत्र धुन, भजन कीर्तन-स्मरण कथावार्ता आदि होगी ।

ऐसा दिव्य अवसर वर्ष में एकबार आता है । जिसका अलौकिक लाभ लेकर अपना जीवन प्रभुमय बनाकर मोक्ष और कल्याण की तरफ आगे बढे । यही मनुष्य जीवन की सार्थकता है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवम्बर-२०१९)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर पलसाणा (कलोल) सत्संग सभा के अवसर पर आगमन।

३ सोनारडा (दहेगाम) गाँव में सत्संग सभा में आगमन।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर संत महादीक्षा स्वंय के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ।

८ खेरवा गाँव में (पंचमहाल) कथा अवसर पर आगमन।

९ सायं श्री स्वामिनारायण मंदिर (मांडवी) कच्छ में आगमन।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर (मांडवी) कच्छ में कथा में आगमन।

११ शायं जीरागढ (हालर) में आगमन।

१२ श्री स्वामिनारायण नूतन मंदिर जीरागढ (भाईयो और बहनोका) में मूर्ति प्रतिष्ठा तथा श्री रोकडिया हनुमानजी महाराज के नये मंदिर की उद्घाटन विधे तथा कथा पारायण की पूर्णाहुति स्वयं के करकमलो द्वारा सम्पन्न किये।

१५ से १७ ग्रीफीथ (ओस्ट्रेलीया) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में खात विधिअपने करकमलो द्वारा सम्पन्न हुई।

१८ से २१ पर्थ एडीलेड (ओस्ट्रेलीया) में सत्संग सभा अपने सानिध्यमें हुई।

२२ से २४ डेरीमेट (मेलबोर्न ओस्ट्रेलीया) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा स्वंय के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुई।

२५ स्वदेश आगमन।

३० श्री स्वामिनारायण बाग मेमनगर से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर संत-हरिभक्तो के साथ पदयात्रा में आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवम्बर-२०१९)

३० से ६ नवम्बर अमेरिका आगमन।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) तुलसी विवाह पर आगमन।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाम श्री विष्णुयज्ञ और पारायण अवसर पर आगमन।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर पाटोत्सव और शाकोत्सव अवसर पर आगमन।

१८ गमीज गाँव में कथा अवसर पर आगमन।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में होमात्मक महापूजा स्वंय के करकमलो द्वारा संपन्न किये।
श्री स्वामिनारायण बाग मेमनगर से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर संत-हरिभक्तो के साथ पदयात्रा में आगमन।

नागरवेल

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

पुगीफलं महद्‌दिव्यं नागरवल्लीदलौर्युतम् ।
एलादिचुर्ण संयुक्तं तांबुलं प्रतिगृहयताम् ॥

इस श्लोक के साथ ब्राह्मण पंचोपचार अथवा षोडशोपचार पूजा विधिमें नागरवेल के पत्ते में लौंग – ईलायची रखकर देवताओ को नैवेद्य के बाद मुखवास (मुखशुद्धि) अर्पण करते हुए देखते है। इस पृथ्वी पर १८ करोड पेड-पौधे होने के बाद भी देव पूजा में मुखशुद्धि के लिये नागर वेल का उपयोग किया जाता है । इस वनस्पति की उत्पत्ति की कथा वेदव्यास श्रीकृष्णद्वैपायन भगवानने स्कंदपुराण में विस्तृत रुप से अपने हाथो से लिखे है।

श्रीमद् भागवत पुराणमें एककथा समुद्रमंथन की लिखी गई है । उसमें देव और दानव आपस में मिलकर पुरुषार्थ किये थे। भगवान कच्छपावतार की कृपा से उसमें से चौदह रत्न प्राप्त हुए। उसमें से धनवंतरी महाराज अमृत का कलश लेकर प्रगट हुए । मंथन उद्योग में अमृत रस के बँटवारे के लिये झगडा हुआ । लेकिन कुछ समाधान न निकलने के कारण, लम्बे समय तक कोई पक्ष उसका लाभ न ले सका । काफी देर हो जाने के कारण कलश के अन्दर से लता युक्त वेल पल्वित हो गई । वह देखते-देखते एरावत गज के स्तम्भ पर चढने लगी। उसमें सुगंधित पत्ते निकलने लगे। इस सुगंधके कारण देवताओ का मन आकर्षित होने लगा । अमृत कलश के अधष्ठेता धनवंतरी भगवान इस वनस्पति को देखकर अति खुश हो गये। वह गज के स्तंभ के सहारे देखकर गज को संस्कृत में ''नाग'' कहा जाता है। इस कारण से इसकी नाम नागपत्ती, नागवल्ली, नागवेल ऐसा नाम रखा गया । कामदेव खुश होकर उसमें सुगंधभर दिये।

एकबार धनवंतरी नारायण ने नाग वल्ली के पत्ते में अन्य सुगंधित पदार्थ मिलाकर स्वर्ग के राजा इन्द्र देव को खिलाये। इन्द्र अति खुश हुए। तब इन्द्रने कहा प्रभु माँगिये – माँगिये । धनवंतरिजी बोले कि नागरवेल के पत्ते से जैसे देवता लोग खुश है। इसी तरह त्रिलोकी के लोक के लोग भी इसका लाभ ले। इसके प्रचार की अनुमति प्रदान करे। तब इन्द्र देवने नागरवेल वनस्पति को पृथ्वी पर बाई की अनुमति दिये और कहे कि इस पत्ते से जो भी मनुष्य देवता की पूजा करेगा । उसकी सभी मनोकामना हम सभी पूर्ण करेगे।

नागरवेल वनस्पति लता को दक्षिण भारत में कुमारिका क्षेत्र के उद्यानो में देवताओ द्वार बुवाई की गयी । उसका रंग-सुगंध-स्वाद अति सुदंर उस पर स्वयं कामदेव का निवास इस कारण से पृथ्वी पर के राजा-महाराजा धनपति, महाजनो में नागरवेल का पत्ता खाने की ललक बढती गई। उसमें कई प्रकार के अन्य सामग्री डालकर और आकर्षित बना दिये । पहले तो भोजनोपरान्त मुखशुद्धि के लिये खाया जाता ता । कालान्तर में लोग पूरे दिन पान खाने वाले लोग हो गये। नागरवेल आपसी मित्रता संधिमें पान-श्रीफल के साथ रखा जाता है।

कुछ समय पश्चात तमोगुणी लोग पान में नशायुक्त पदार्थ मिलाकर खाने लगे। और मद में आ जाते है। उत्तम वर्ण के लोग उसमें से कुछ लोग विद्वान भी पान के नशे में

पृथ्वी पर काफी समय तक देवताओ की पूजा हवन बंद कर दिये थे । इस कारण से देवो का बल क्षीण हो गया । लोग भोग-विलासी हो गये । वे लोग प्रातः काल से रात्रि शयन तक पान खाना बंद नहि किये ।नागरवेल में विराजमान कामदेव ने पृथ्वी पर अपना प्रभाव अधिक बना लिये । देवताओ की दयनीय हालत देखकर देवराज इन्द्र पितामह ब्रह्माजी के पास जाकर विनती किये कि हे पितामह ! पृथ्वी पर हमारी पूजा-पाठ हवन बंद हो गयी है । ये सब समाप्त हो ऐसी कृपा करे ।

पितामह ब्रह्माजी पृथ्वी पर पुष्कर क्षेत्र में पधारे । यहाँ की हालत बाहर से और अंदर से देखकर उपाय सोचने के लिये । पुष्कर सरोवर के घाट पर बिराजमान हुए । वहाँ एक अति दुःखी औरत सामने आयी और हाथ जोडकर ब्रह्माजी के सामने रोने लगी । ब्रह्माजी औरत का करुण क्रंदन सुनकर बोले कि आप कौन है ? औरत बोली मैं साक्षात् दरिद्रता हूँ । मैं ब्राह्मणो , विद्वानो के घर रहकर उपवास करके दुःखी हो गई है । मुझे धनवान के घर रहने को अनुमती दे । उसी समय ब्रह्माजी ने पृथ्वी के उपर निवास करने वाले जो नागरवले के पत्ते में नशीले पदार्थ के शौकीन हो गये थे । उन्हे तथा जो लोग पान में नशीले पदार्थ मिलाकर खाते है । उन परिवार में 'दरिद्रता' को सपरिवार निवास करने के लिये आज्ञा दे दिये । हे स्त्री तुम सदैव तम्बाकू युक्त नागरवेल में निवास करना ।

ब्रह्माजी अनुमति से दरिद्रता ने कम समय में बड़े-बड़े राजा-महाराज, धनपतियों को जो पान में नशा करते थे । वे अपने देव कर्म-पितृकर्म से भ्रष्ट हुए थे । वे लोग दुःखी-दुःखी हो गये ।

राजसत्ता-धन सम्पति सुख-वैभव खो जाने वाले व्यक्ति पुनः अपनी गलती का अनुभव करने लगे । वे ऋषियो के शरण में गये । ऋषियोने पुनः उन्हे अपनी-अपनी कुल परम्परा अनुसार पूजा-पाठ हवन के लिये प्रेरित किये । कुछ समय के बाद वे लोग पुनः सत्ता प्राप्त कर लिये ।

ब्रह्माजीने नागरवेल के पत्ते को देव पूजन में आसन के रुप में और उसमें लौग-इलायची मिश्र करके मुख शुद्धि (मुखवास) के रुप में स्थान दिये । जो व्यक्ति तम्बाकू युक्त पान खाता है । शायद उसके प्रारब्धमें घर धन, लक्ष्मी, समृद्धि सब कुछ इंगित हो फिर भी ब्रह्माजी के वचन से उसका नाश होता है । उसके घर में दरिद्रता स्थाई रहती है । कितना धन आये अन्त में धन समाप्त हो जाता है ।

पान देव कर्म में उपयोगी पवित्र नवस्पति है । उसमें तज, लौंग, इलायची, और जैसे पदार्थ मिलाकर भगवान को अर्पण किया जाता है । उसका प्रसाद भी भक्तो में बाँटा जाता है । रात्रि में पान खाना वर्जित है । क्योंकि उसमें कत्था रात्रि में खाना वर्जित है ।

नागरवेल में तम्बाकू मिलाकर जो कोई पान खाता है । उसे दरिद्रता कभी माफ नही करती है । नागरवेल के पत्ते में औषधीय गुण होता है । लेकिन तम्बाकू मिला देने से विष समान हो जाता है ।

नागरवेल पान देव पूजा में देवताओ के आवाहन - तत्वो के आवाहन और आसन के रुप में शास्त्रो में व्यवस्था की गई है ।

जिसके घर में नागरवेल का पत्ता अथवा उसका तोरण बनाकर द्वार पर लगाया जाता है । उस घर से दरिद्रता चली जाती है । सुख-समृद्धि शायद प्रारब्धमें न भी हो तो भी प्राप्त होती है ।

आउट स्टेट के अपने मंदिरो में बाहर जाने वाले हरिभक्तो के लिये सूचना

अन्य स्टेट में आने वाले श्री स्वामिनाराय मंदिर में दर्शन हेतु जाने वाले भाविक भक्त जिस मंदिर में जाने वाले हो वहाँ पर पहले से फोन करके व्यक्ति समय अवश्य सुनिश्चित कर ले । आप बिना फोन के व्यवस्थापको की व्यवस्था में तकलीफ ला देते है । इस से व्यवस्थापक परेशान हो जाते है । इस लिये अपने सभी मंदिरो में फोन करके सभी सूचना और आई.डी. प्रुफ अग्रिम रुप में प्रेषित करे । ताकि आप की सुचारु व्यवस्था हो सके । यह आप सभी के लिये विशेष सूचना है ।

पुराण पुरुष हरिकृष्ण का भजन करें

– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

॥ अष्टपदी ठुमरी राग ॥ निष्कामानंद वर्णिरचित:

भजमानस त्वं श्रीहरिं हरिकृष्णंपुराणम् । भज..... ध्रुवपदम्
मायापारे निलये निवसन्तम् । मुनिजनमण्डलमण्डितं.. हरि..॥१॥
नवधनमेचकमंगं दधानम् । वामरिपुमदमारकम्.. हरि..॥२॥
भास्वद्द्युतिवसनैर्विलसन्तम् । बहुविधभूषणभूषितम्.. हरि..॥३॥
भुवि शकुलाद्याकृतिं विदधानम् । स्वीयजनानन्ददायकम्.. हरि..॥४॥
प्रेमवतीवृषलालं विशोकम् । दुर्गपत्तनसंवासिनं.. हरि..॥५॥
उन्मतगंगाजले विहरंतम् । जानसुधाजनशंकरम्.. हरि..॥६॥
ब्रह्मप्रियं ब्रह्मावर्तधरवेषम् । ब्रह्मव्रतधरनायकम्.. हरि..॥७॥
हंसरूचिरगमनं कंजनेत्रम् । धर्मवंशावनकारकं.. हरि..॥८॥
निष्कामवर्णिरचितगीतगीतम् । निष्कामनरव्रजशर्मद.. हरि..॥९॥
॥ इति निष्कामानन्दवर्णिविरचिता अष्टपदी समाप्ता ॥

भजमानस त्वं श्रीहरिं हरिकृष्णंपुराणम् । भज..... ध्रुवपदम्

भगवान श्री स्वामिनारायण का जिस-जिस योग भ्रष्ट ऐसे मुमुक्षुओ का साथ हुआ । उनको सर्ववतारी भगवान श्रीहरि सहजानंद स्वामी साक्षात् प्रगट प्रमाण पुरुषोत्तम नारायण है ऐसा दृढ निश्चय अपने दिल में तत्काल होता है । ऐसे दृढ निश्चय वाले साथ करने वाले ऐसे शुभ प्रयत्नो से महान परम हंसो ने श्रीहरि की आज्ञा से सदैव करते रहते है । ऐसे श्रीहरि के गुण ऐश्वर्य और लीलाचरित्रो का गान भक्तो के सामने करते थे । उसकी अपने सम्प्रदाय में गद्य साहित्य में सृजन किये थे । उसे संस्कृत भाषा के विद्वानोने श्रीहरि का निश्चय हो इस उद्देश्य से संस्कृत भाषा में अष्टक की रचना की है । इसका गान करने से सुनने वाले के हृदय में बात बस जाती है । ऐसा अष्टक है । जिस में वर्णीराज श्रीनिष्कामानंदजी अपने ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वरुप का ज्ञान हो ऐसे शब्दो में वर्णन करते है । जिसका अर्थ समझने का प्रयास करेगे ।

मायापारे निलये निवसन्तम् ।
मुनिजनमण्डलमण्डितं.. हरि..॥१॥

माया जिसे शास्त्रो में त्रिगुणात्मिक कहते है सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण जहाँ पर होता है । वहाँ पर माया होती है । जहाँ पर माया होती है वहाँ पर भेद होती है । जहाँ पर इस प्रकार का कोई भेद नही होता है । वहाँ पर निवास करते है । अर्थात् उनका धाम है । जिसे अक्षरधाम कहते है । उसे चिदाकाश धाम कहते है । ब्रह्मधाम कहते है । सदैव द्विभुज दिव्य साकार मूर्ति ऐसे पूर्णपुरुषोत्तम श्रीहरि अनंत कोटि अक्षरमुक्त जिसका अखंड ध्यान पारायण करके देख रहे है । ऐसे दिव्य स्वरुप को धारण करके अपने मूल स्थान पर सदैव एक स्थिति में रहने वाले अनादिकाल से पुराणपुरुष परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनरायण पृथ्वी उपर हरिकृष्ण नाम धारण करके मनुष्याकृति रुप में विचरण करते है । हे मानव उनकी भजन करो जिससे तुम्हे अक्षरधाम में निवास करने का अवसर प्राप्त हो । (१)

नवधनमेचकमंगं दधानम् ।
वामरिपुमदमारकम्.. हरि..॥२॥

धर्मदेव और माता भक्तिदेवी के घर में मनुष्य शरीर जिसने धारण किया है । मानव शरीर का वर्ण अर्थात् रंग श्याम है । ऐसा लगता है कि आषाढ मास के आकाश में नये-नये बादल जल युक्त जिसका रंग श्याम है । सम्पूर्ण ब्रह्मांड में निवास करने वाले दानव, मनुष्य और सिद्ध तपस्वियों को पराजित करने वाले वामरिपु अर्थात् कामदेव के गर्व को दूर करे ऐसा उनका सौन्दर्य हो । वे पुरुष पुराण परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण आज पृथ्वी के उपर जो हरिकृष्ण नाम से प्रगट हुए तथा मनुष्याकृति धारण करके विचरण करते है । हे मानव उनकी भजन करो जिससे तुम्हे अक्षरधाम में निवास करने का अवसर प्राप्त हो । (२)

भास्वद्द्युतिवसनैर्विलसन्तम् ।
बहुविधभूषणभूषितम्.. हरि..॥३॥

अपने भक्तो के समुदाय में सदैव विचरण करने वाले श्वेत वस्त्र धारी जिसकी चमक ऐसा आभास कराता है कि सूर्य सम्पूर्ण तेज के साथ पृथ्वी पर आ रहे हो .ऐसे सुंदर तेजस्वी वस्त्र से शोभायमान है । उसी प्रकार वे समस्त अंगो पर तरह-तरह के हीरे मोती से जडित सोने के आभूषणो से युत है । वे पुरुष पुराण परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण आज पृथ्वी के उपर जो हरिकृष्ण नाम से प्रगट हुए तथा मनुष्याकृति धारण करके विचरण करते है । हे मानव उनकी भजन करो जिससे तुम्हे अक्षरधाम में निवास करने का अवसर प्राप्त हो । (३)

भुवि शकुलाद्याकृतिं विदधानम् ।
स्वीयजनानन्ददायकम्.. हरि..॥४॥

अपने प्रिय भक्तो को सुख देने के लिये और उनका मनोरथ पूर्ण करने के लिये । अपने अक्षरधाम में ले जाने के लिये जो इस पृथ्वी पर अनेक प्रकार के चित्र-विचित्र आकृति वाले शरीर धारण करके अवतार लेते है । अपने आश्रितो को महासुख जो अविनाशी अक्षरधाम में होता है । उस अक्षरधाम में ले जाते है । वे पुरुष पुराण परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण आज पृथ्वी के उपर जो हरिकृष्ण नाम से प्रगट हुए तथा मनुष्याकृति धारण करके विचरण करते है । हे मानव उनकी भजन करो जिससे तुम्हे अक्षरधाम में निवास करने का अवसर प्राप्त हो ।(४)

प्रेमवतीवृषलालं विशोकम् । दुर्गपत्तनसंवासिनं..
हरि..॥५॥

प्रेम लक्षीय भक्ति करके जिसे पाया जा सकता है । उन्हे उनकी माता भक्तिदेवी ने प्रेम से लालन-पालन की थी । और पितावृष अर्थात् धर्मदेव के पुत्र होकर उनके पूरे शोक को दूर किये । उसी प्रकार दुर्गपुर में निवास करने वाले अपने भक्तो को प्रेम करने वाले उनके दुःखो को दूर करते है । वे पुराण पुरुष परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण आज पृथ्वी के उपर जो हरिकृष्ण के नाम से प्रगट हुए है । मानव शरीर धारण करके विचरण कर रहे है । हे मानव उनकी पूजा अर्चना भजन करो जिससे वे अक्षरधाम निवासी के अवसर प्रदान करेगे । (५)

उन्मतगंगाजले विहरंतम् । जानसुधाजनशंकरम्..
हरि..॥६॥

मानव देहधारी भगवान श्रीहरि गढपुर में निवास करते है । वे उन्मतगंगा अर्थात धेला नदी में प्रतिदिन स्नान क्रिडा करते है । उस नदी के जल को पवित्र करते है । अपने स्वरुप का एकान्दिक सरल स्वरुप स्वभाव वाले साधुजनो को भक्तो को वचनामृत द्वारा ज्ञान देकर अ७रधा के महान ब्रह्मानंद का अनंद प्रदान करते हे । वे पुरुष पुराण परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण आज पृथ्वी के उपर जो हरिकृष्ण नाम से प्रगट हुए तथा मनुष्याकृति धारण करके विचरण करते है । हे मानव उनकी भजन करो जिससे तुम्हे अक्षरधाम में निवास करने का अवसर प्राप्त हो ।(६)

ब्रह्मप्रियं ब्रह्मवर्तधरवेषम् । ब्रह्मव्रतघरनायकम्..
हरि..॥७॥

शिक्षापत्री श्लको ११६ में बताये अनुसार शरीर स्थूल, सूक्ष्म और कारण से अलग अपनी आथ्मा का ब्रह्मरुप करके भजता है । उसे वह प्रिय है । अथवा ब्रह्मरुप भक्त जिन्हे प्यारे है । स्वयं शरीर धारण किये हुए है । उस शरीर में भी नैष्ठिक ब्रह्मचारी जैसा भेष जिन्हे प्रिय है । ब्रह्मचर्य व्रतधारियो में जो सर्वश्रेष्ठ हो । उनके नायक है । आराध्य है । उपासना करने योग्य है । वे पुरुष पुराण परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण आज पृथ्वी के उपर जो हरिकृष्ण नाम से प्रगट हुए तथा मनुष्याकृति धारण करके विचरण करते है । हे मानव उनकी भजन करो जिससे तुम्हे अक्षरधाम में निवास करने का अवसर प्राप्त हो ।(७)

हंसरूचिरगमनं कंजनेत्रम् । धर्मवंशावनकारकं..
हरि..॥८॥

जिसके शरीर की सुंदरता और उनके चलने का तरीका मंद गति वाले हंस की चाल है । अथवा अपने आश्रित परमहंसो के गति समान जिनकी तिल चिन्ह युक्त स्वरुप है । जगत के जीवो पर दाय करने वाले जिनके आँखो में दया और करुणा भरी हुई है । वह सरोवर में खिले कमल के समान शोभायमान है । जिनका कार्य अपने पिता धर्मदेव के वंस की रक्षा करना है । जिसमें धर्म, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य आदि सद्‌गुण भरे है । वे अपने आश्रितो की रक्षा करते है । वे पुरुष पुराण परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण आज पृथ्वी के उपर जो हरिकृष्ण नाम से प्रगट हुए तथा मनुष्याकृति धारण करके विचरण करते है । हे मानव उनकी भजन करो जिससे तुम्हे अक्षरधाम में निवास करने का अवसर प्राप्त हो ।(८)

निष्कामवर्णिरचितगीतगीतम् ।
निष्कामनरव्रजशर्मद.. हरि..॥९॥

निष्काम भक्त जो संसार के नाशवान पदार्थ की नाश नही रखते है । वे भक्त गाये गीत को गाते है । अर्थात् याद रखते है । वैसे भक्तो की प्रार्थना सुनते है । ऐसे भक्तो की अपने स्वरुप का सुख देते है । संसार की कोई कामना या वासना उनके हृदय में नही है । वैसे भक्त को शरण प्रदान करते है । तथा मोक्ष देते है । ऐसे श्रीहरिके निष्कामानंद वर्णी द्वारा रचित स्तोत्र का गान करेगे । वे पुरुष पुराण परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण आज पृथ्वी के उपर जो हरिकृष्ण नाम से प्रगट हुए तथा मनुष्याकृति धारण करके विचरण करते है । हे मानव उनकी भजन करो जिससे तुम्हे अक्षरधाम में निवास करने का अवसर प्राप्त हो ।(९)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

जयपुर मंदिर पंचदशाब्दि महोत्सव और बालधुन मंडल स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर ता. १-९-२०१९ : अभी स्वामजीने अच्छी बात बताई, सिद्धान्त के विषय में यह बात कई वर्ष पहले हमने भूज में पाटोत्सव के समय बताया था । जब मेतपुर के लोग दर्शन के लिये आये थे । वही बात पुन स्मरण करता हूँ । जब तक देव न हो द्रव्य नही देना चाहिए । यह सिद्धान्त का विषय है । दस्तावेज देव का होना चाहिए । क्योकि महाराज ने कहा है जो कुछ हो लिखित होना चाहिए । कितना भी हो कुछ भी हो, नजदीक के सगे-सम्बन्धी तो भी यदि लिखित नही होगा तो कल झगडा होने की पूरी सम्भावना होती है । हम सब प्राय: ये देखते है कि कई विवाद इस आज्ञा का न पालन करने से होता है । इस लिये यह सिद्धान्त का पालन करे । संतो की प्रेरणा मार्गदर्शन से आप द्रव्य प्रदान करते है । वह अच्छी बात है । लेकिन मन और तन की सेवा छोटी नही कही जा सकती है । बडी से बडी सेवा समय की सेवा है । क्योकि आजतक किसी के पास किसी के लिये समय नही है । पिता को पुत्र के लिये समयाभाव है । भाई-भाई के लिये समय नही है । जबकि आप देव और मंदिर के लिये समय दे रहे है तो आप धन्यवाद के पात्र है ।

सिद्धान्त की बात करे तो हमने वर्षो तक व्यवस्था की जिम्मेदारी निभाये है । ये सभी लोग हवाई यात्रा में साथ थे । और अभी सभा में बैठे है । ये लोग जानते है कि जहाँ पर मंदिर की प्रतिष्ठा का तारीख आती है । उससे पहले उसके कागज दस्तावेज और निर्माण कार्य पूर्ण होने पर ही मेरे डायरी में लिखा जाता है । एक बार डायरी में लिख लेने के बाद चाहे बादल फटे, भूकम्प आये तो भी हम वहाँ जाते है । लेकिन वह देव का होना चाहिए । यह मेरा आग्रह है । सभी लोग इस सिद्धान्त को जानते है । भावी पीढी यह बात जाने आप लोग जान अवश्य कराये । मुझे क्यो सावधान करना पड रहा है ? तो लोग यहाँ से उठकर बाहर जाने पर सभी भक्त जाते है । इस लिये आप लोग भूले नही इसलिये महाराजजी ने प्रतिदिन शिक्षापत्री के पाठ का आग्रह किये है । इस २१२ श्लोक में कई लोग को ऐसा लगता है कि यह उठकर प्रतिदिन पाठ करे । लेकिन महाराज का मूल आग्रह इस लिये है कि प्रतिदिन पाठ करने से मनन चलता रहता है । इससे उनकी आज्ञा एवम् सिद्धान्त भूल नही जाये ।

आप सभी लोग व्यापार हेतु मेतपुर से आकर यहाँ निवास किये । तथा प्रगति भी किये । महाराजने दो देश प्रशासन के लिये बाँटा था । प्रशासनिक सुविधा के लिए बाकी कोई कारण नही है । आप को जानकारी हो या न हो लेकिन जानकर आश्चर होगा कि न्युझीलेन्ड और आस्ट्रेलिया से प्रारम्भ करके नार्थ-वेस्ट केनेडा और अमेरिका तक अपने मंदिर की व्यवस्था प्रेसिडेन्टो (प्रमुख)ो और कमेटी के सदस्यो द्वारा ९०% व्यवस्थापक वडताल देश के है । ज आज हमें ज्ञात नही था । हमारे मन में कोई भेद नही है । क्यों ? किये सभी देव के है । देव के होने पर कोई अन्तर नही आता है । सीमा रेखा और विभेद अपने से बनाये जाते है । विभेद अपने मन से किया जाता है । महाराज कभी विभेद नही किये । प्रतिष्ठा के समय एक को ऐश्वर्य अधिक तथा दूसरे में कम था । महाराज यह कहे हो कि इस मूर्ति में अधिक तथा दूसरे में कम रहेगे । ऐसा कथन सभा में कभी नही आया है । उसी प्रकार शिक्षापत्री, वचनामृत, सत्संगिजीवन या सत्संगिभूषण आदि शास्त्रो में पढे नही है । अन्तर अपना है । बेद भगवान में नही है ।

(जयपुर के गोविंद मंदिर की गादिपती अंजनीकुमार गोस्वामीजी आये है । ये प.पू. महाराजश्री के लिये पुष्पमाला ठाकुरजी को खेश तथा प्रसाद के साथ भावपूर्वक पूजन करते है ।

अंजनीकुमार आप को प्रणाम स्थान ग्रहण करे । भगवान की कृपा एवम् आप के प्रयास, प्रेरणा से हमे

जिस भगवान के सानिध्य में बैठकर कथा श्रवण कर रहे है । उसके लिये आप की सहृदय धन्यवाद । हमारे मनुष्य शास्त्र शिक्षापत्री में स्वामिनारायण भगवानने सर्व प्रथम मंगलाचरण करते हुए लिखे है।

वामे यस्य स्थिता राधा श्रेध्य यस्यास्ति वक्षसि ।
वृन्दावनविहार तं श्रीकृष्णं हृदि चिन्तये ॥

(मैं हृदयपूर्वक श्रीकृष्ण भगवान का ध्यानक रता हूँ । वे कृष्ण कैसे है जिनके बाँये भाग में राधिकाजी है । जिनके वक्षस्थल में लक्ष्मीजी है । और वृंदावन में विहार करन वाले है । वे गोविन्द जी भगवान के सानिध्य में हम यहाँ बैठे है।

बात ये है कि विश्व के कोने-कोने में प्रशासन मे देव हो चाहे कोई भी देरा हो । उस में कोई भेद नही यही हमें देखना है। अपने धाम की बात प्रतिदिन होती है। करते है न ? गरदन हिलाये तो पता चलेगा हाँ मान ले शरीर त्याग के बाद क्या बटवारा हुआ है। नही ? तो यहाँ विभाजन करना आवश्यक है ? विभाजन अपने दिमाग का है । विभाजन हम अपने स्वभाव से किये है। भेद है वे भगवान नही है। एक करे भगवान है । यह सनातन सत्य है । भगवान के स्वरुप में भेद मत करे ।

महाराज ने तो शिक्षापत्री में यहाँ तक लिखे है कि,

दृष्ट्वा शिवालयादीनि देवागाराणि वर्त्मनि ।
प्रणम्य तानि तद्देवदर्शनं कार्यमादरात् ॥

रास्ते में से जाते समय यदि शिवालय या देव मंदिर आये तो उसे नमस्कार करना और आदर के साथ देव का दर्शन करना चाहिए । भगवान की आज्ञा है। किसी को कष्ट हो तो हम क्यो प्रणाम करे ? यह अपनी व्यक्तिगत मान्यता है । भगवान के अवतार हो या सात्विक देवता या देवी हो उन्हे आदर के साथ पूजा और प्रणाम करना चाहिए । ये अपना धर्म है और सिद्धान्त है। इसी में सुख भी है।

आप सब यहाँ आकर बसे हो । अच्छा है। हम लोग यहाँ जगह लिये है। नारणस्वरुप स्वामीने जिम्मेदारी प्रदान किये है। उसमें आप सभी को सहयोग करना है। भगवान ने आप को दिया है। तो भगवान के कार्य में सहयोग करे । मैं यह नही कह रहा हूँ कि आप कर्ज लाकर मत दे । किसी को मंदिर के सीढीयो का रास्ता दिखाने पर भी भक्त को फल मिलता है। शास्त्र की यह बात है। बाहर से आये है ऐसा नही कह रहा हूँ। जो स्थानीय है उनसे भी आग्रह कर रहा हूँ। आज्ञा नही कर रहा हूं। आप का है आप को प्रयोग करना है । देव का है । नारण स्वामी ! प्रेरणा देगे । नारण स्वामी तनाव में थे । अब रिलेक्स हो गये है । भगवान जैसे भगवान बैठे है। तो चिंता क्या करना ? आज तक कोई कार्य अपना रुका है । भगवान पर विश्वास और भगवान का बल हो तो क्या नही हो सकता है ? न हो ऐसा विचार आये तो दो दिन का उपवास कर लेना चाहिए । देव के सहारे रह कर कार्य करना चाहिए।

मेतपुर बालधुन मंडल को ५० वर्ष हो गया । अब अगला ५० वर्ष देखना है । देव हम लोगो को छोडकर जाने वाले नही है । लेकिन भविष्य की पीढीयो में संस्कार बना रहे । इस लिये मंदिर में भगवान है। लेकिन यही भगवान आप के घर में है। वही भगवान आप के हृदय में भी है . ऐसा वातावरण देना पडेगा । घर का वातावरण शुद्ध, सात्विक और पवित्र रहेगा । तो बच्चो पर असर होगा । उपदेश काम नही आता है। हम ज्ञानी या दयावान बहुत बड़े भक्त है ऐसी अवधारणा नही बनानी चाहिए । बच्चो को मंदिर लाना है तो हमें अनुकुल बनना होगा । एक जगह मंदिर के अंदर कथा चल रही थी । मैं मंदिर के बाहर से निकलता तो ७-८ वर्ष का लडका खेल रहा था । मस्ती कर रहा था । हम उससे बोले कि मंदिर में आने के लिये आप को क्या करना चाहि ? हमें बच्चो से पूछना चाहिए । विपरित चलना पडेगा । आप का सत्संग प्राचीन है । मेतपुर में प्रत्येक घर में गया हूँ । इसलिये अधिक बोलना नही है । लेकिन वातावरण ऐसा रखे कि आगामी ५० वर्ष के बाद दूसार उत्सव हो सके । तब मैं न आ पाउ तो लालजी महाराज अवश्य आये । देव के दस्तावेज वाले अभी अपने ५०० मंदिर हो चुके है। देव का दस्तावेज न होने पर पूर्णाहुति हो जाती है । श्रीपति श्रीधर्म... हो जाता है।

इतना बोलकर प.पू. महाराजश्रीने सभी को अन्तःकरण से आशीर्वाद प्रदान किये थे ।

सर्वैरपि यथाशक्ति भाव्यं दीनेषु वत्सलैः

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)

शिक्षापत्री श्लोक २३ में श्रीहरि की आज्ञा.... अपने शक्ति के अनुसार गरीबो के प्रति दाय भाव होना। इस सम्प्रदाय के सत्संगी मात्र की समाज के प्रति उदार भावना व्यक्त करता है। यह शिक्षापत्री सभी जीवो के लिये लाभदायक हो। शिक्षापत्री में दी गई आज्ञा जीव के इस लोस, परलोक के हित हेतु की है। आज संसार में लगे है। और दुःखी भी होते है। लोभ, अविश्वास और असंतोष की भावना इतनी भर गयी है कि जीवन के अंतकाल आते समय पर भी अपनी सम्परत्तिका अधिकार बच्चो को नही दे पा रहे है। वे समाज को क्या देगे ? इस वर्तमान समय में श्रीहरि श्लोक ८३ में दी गई आज्ञा सत्संगि मात्र को एक उत्तम व्यक्ति मानती है।

श्रीहरिने जब धर्म की घुरी सम्भाले तब अपने गुरु से दो वरदान प्राप्त किये। वो भी अपने लिये नही बल्कि सभी के जीव को सुख देने के लिये।

कृष्णभक्त जो पूर्वेने कर्मे रे,
पामे अन्नवस्त्र परिश्रमे रे ।
तेनुं दुःख आवे मुज मांय रे,
एह सुखमां रहे सदाय रे ॥
(भ.चि.प्र.–४७, कडी–२०)

स्वयं अपने लिये जीवित रहने के सिवाय परोपकार के लिए जीना और कर्म करना जीवन का आधार है। श्रीहरि जीवन के समय धर्म–उपदेश के साथ समज के उत्थान के लिये सदाव्रत जैसी उच्च प्रवृत्तियाँ किये थे। आजभी सम्प्रदाय के मंदिरो में भोजन विना किसी भेद–भाव के साथ दिया जाता है। समाज के सभी लोगो को समान प्रसाद दिया जाता है। यह सम्प्रदाय का गौरव है।

श्रीहरि एकबार दिवाली के दिन कारीयाणी में सभा किये। तभी प्रेमी हरिभक्तोने महंगे–महंगे वस्त्र आभूषण श्रीहरि की पूजा करके दिये। श्रीहरि उसे स्वीका करके उसी समय दीनानाथ भट्ट विद्वान ब्राह्मणको श्रीहरिने सभी वस्त्रालंकार दे दिये। स्वयं भगवान है, राजाधिराज है। वह किसी का लेने के लिये नही बैठे है। वे देने के लिये बैठे है। योग्य पात्र मिलने पर तत्काल दे दे। किसी का रास्ता नही देखते है। (का.–६ वचनामृत)

नित्य लीला चेष्ठा पदो में प्रेमानंद स्वामी लिखते है।

अतिदयालु रे, स्वभाव छे स्वामीनो,
परदुःखहारी रे, वारी बहुनामीनो
कोईने दुःखियो रे, देखी न खमाये,
दया आणी रे, अथि आकळा थाये
अन्न धन वस्त्रे रे, आपीने दुःख टाळे,
करुणादृष्टि रे, देखी वान ज वाळे.

श्रीहरि का आचरण और व्यवहार यही उनका उपदेश है। अपने आश्रित लोगो को श्रीहिर आज्ञा करते है कि गरीब के प्रति अपने हिसाब से दया अवश्य रखनी चाहिए। उसे कुछ देकर दुःख में सहायता करना चाहिए। श्रीहरि वचनामृत वरताल–११ में अपनी बात करते कहते है। हमारा तो ऐसा स्वभाव है कि एक तो भगवान, दूसरा भगवान के भक्त, तिसरा ब्राह्मण चौथा गरीब इन सभी से हम अधिक डरते है। और किसी से भय नही लगता है।

स्वयं जो सर्वावतारी पुरुषोत्तम नारायण होने के बाद भी ऐसे वचन कहे है। ये अपने लिये उपदेश है। आज के स्वार्थ–कपट युक्त समज में दुःखी व्यक्ति के लिये 'मेरा क्या ? हमारा क्या ? ऐसी भावना हो गयी है। और स्वकेन्द्री लोग हो गये है। तब श्रीहरि शिक्षापत्री श्लोक ८३ को आज्ञा आश्रित मात्र को परदुःखहारी बनने के लिये कहते है। हमे जितना प्रयास दूसरे के दुःख को कम करने में करेगे। उससे हजार गुना प्रयास भगवान हमारे दुःख को काटने के लिये करेगे। ये बात हमें समझनी चाहिए।

गरीब असहाय के प्रति तुलसीदास लिखते है।

तुलसी हाय गरीब की, कबहु खाली न जाय।
मुई खाल की साँस से, सार भस्म हो जाय॥

गरीब की हाथ से सत्कर्म भी शीध्रता से नाश हो जाता है। भगवानने जो कुछ भी हमे दिये हे, उसमें से कुछ मात्रा परोपकार में अवश्य लगाना चाहिए। सम्पति इकठ्ठा करने के लिये पूरा जीनव ही पडा है। लेकिन योग्य पात्र मिलने की घडी निश्चित नही है। योग्य समय टल जाने पर तो

धन का उपयोग व्यर्थ है । सम्पत्ति के ठेर पर बैठ व्यक्ति के विषय में कवि लिखता है कि -

बडा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड खजूर ।
पंथी को छाया नही, फल लागे अति दूर ॥

जो सम्पत्ति किसी के काम में न आवे वह धन सम्पत्ति निरर्थक है । सत्ता और सम्पति कब चली जाये यह निश्चित नही है । लेकिन जब तक अपने पास हो उसका सदुपयोग करना चाहिए । लोक-परलोक मे यश मिले ऐसे अच्छे कर्म अवश्य कर लेना चाहिए ।

इस जीव का एक स्वभाव है कि उसे परमात्मा के पास से माँगना भी नही आता है । हिरण्यकश्यप परमात्मा से वरदान में शास्त्रो को माँगा फिर भी कुछ काम में नही आया । यह इतिहास हम सबको ज्ञात है । भगवान श्रीहरि ने लोह में क्या माँगना चाहिए यह भी ग.प्र. ४८ वचनामृत में बताये है । उसकी समझ रखना चाहिए । अज्ञानी जीव मंदिर में ढाकुरजी के सामने हाथ जोडकर धन-सम्पत्ति माँगता है । यह अनुभव कराता है कि मंदिर के अंदर-बाहर धन-सम्पत्ति के भिखारी ही है । अंदर धनवास भिखारी और बाहर गरीब भिखारी है । एक बाहर कटोरा लेकर खडा है । दूसरा अच्छी तरह से दोनो हाथ जोडकर खडा है । लेकिन दोनो की माँग तो एक ही है । कि भगवान मुझे कुछ प्रदान करे । हमे ऐसा नही बनना है । भगवान हमें मिले है । हम राजा के कुंवर है । पुरुषोत्तम नारायण के गले में मंगलसूत्र रुपी कंठी है और सौभाग्य का प्रतीक तिलक और चाँदला माथे पर है । अपने पुण्य का फल है । धर्मदेव के शब्दो में लिखते निष्कुलानंद स्वामी भ.चि.प्र.-१३, कडी-४६ में लिखते है ।

माटे सुख दुःख लख्युं जे भाल रे,
मटे घटे नहि एख वाल रे ।
देव ऋषि राजाथी न मटे रे,
जेने जेवुं लखाणुं छे घटे रे ॥

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रासदजी महाराजश्रीने एकबार बताये गये प्रसंग को संक्षिप्त रुप से बताते है । वे लालजी स्वरुप में थे । तब प्रातः ५ बजे एक वार धर्म कार्य के लिये बाहर जाना पडा था । उनकी गाडी के आगे संत लोग गाडी में बैठे थे । प्रातः काल दोनो गाडियाँ रेलवे फाटक बंद होने के कारण रुकी हुई थी । वहाँ पर एक वृद्ध संतो की गाडी के पास गया, हाथ जोडकर याचना किया । कुछ समय के बाद लालजी महाराज की गाडी के पास आया । कुछ बोले विना दोनो हाथ जोडकर याचना करने लगा । बचपना होने के कारण लालजी अपने जेब में कुछ रखते नही थे । इस कारण से वह उसे कुछ दे नही शके । वह उनको नमस्कार किये । वृद्ध वहाँ से सडक के किनारे चला गया । प्रातः काल कचरा-प्लास्टिक उठाने वालो एक औरतने यह दृश्य देखा । वह अपने थैली में से पाँच रुपये दी । और यह पूरा दृश्य देखकर लालजीश्री का हृदय पीघल गया और बोल कि ''मुझे आज पता चला की भिखारी कौन है ।'' मैं संयोगवस उसे कुछ नहीं दे सका था । इसका प्रभाव इनके दिल पर गहरा पडा था । तब से आज तक उनके सामने कोई माँग करता है तो उसको अवश्य प्रदान करते है । किसी को खाली नही जाने देते है । मुठ्ठी भरकर धन देते हुए कई लोगो ने कईबार देखा है ।

आर्थिक रुप से छोटा लेकिन मन के उदार व्यक्ति अन्य व्यक्ति की सहायता कर सकते है । केवल अपनी ईच्छा का होना आवश्यक है । समाज अपने को बहुत कुछ प्रदान किया है । जब अपना अवसर आये तो उसका कर्ज अवश्य उतारना चाहिए । सेवकराम की तरह कृतज्ञ बनना चाहिए ।

सम्प्रदाय में आचार्य महाराजश्री मार्गदर्शन में आँगन जैसा अनाथ आश्रम, मंदिर में गौशाला, महीने से कई दिन सदाव्रत जैसे कार्य चलते है । ये श्रीहरि के आज्ञा का पालन ही है ।

साधुजन, गरीब, असहाय कभी भी आप से याचना करे तो यथा शक्ति मदद अवश्य करना चाहिए। कभी उन्हे कडवे वचन न कहे । ये न भूले की हम भी तो हमेशा भगवान के पास से माँगते रहते है । पाँच-पच्चीस रुपया धर्मादा में एक नारीयल, फूल माला देकर उनसे कितना माँगते रहते है । वापस देने के लिये हम श्रीहरि शिक्षापत्री के आज्ञा का पालन नहीं करते है । न तो धर्मवंशी आचार्य, संतो की आज्ञा का पालन करते है । अन्ततः जिसके दरबार में जाना है उनके आदेश का खुलेआम उल्धन करते है । यह मूर्खतापूर्ण समझदारी है ।

हम विवेक पूर्वक श्रीहरि की आज्ञा को देखे । धर्मवंशी आचार्यश्री की आवाज सुने, सम्प्रदाय की मर्यादा में वृद्धि हो ऐसे सच्चे सत्संगी बने ।

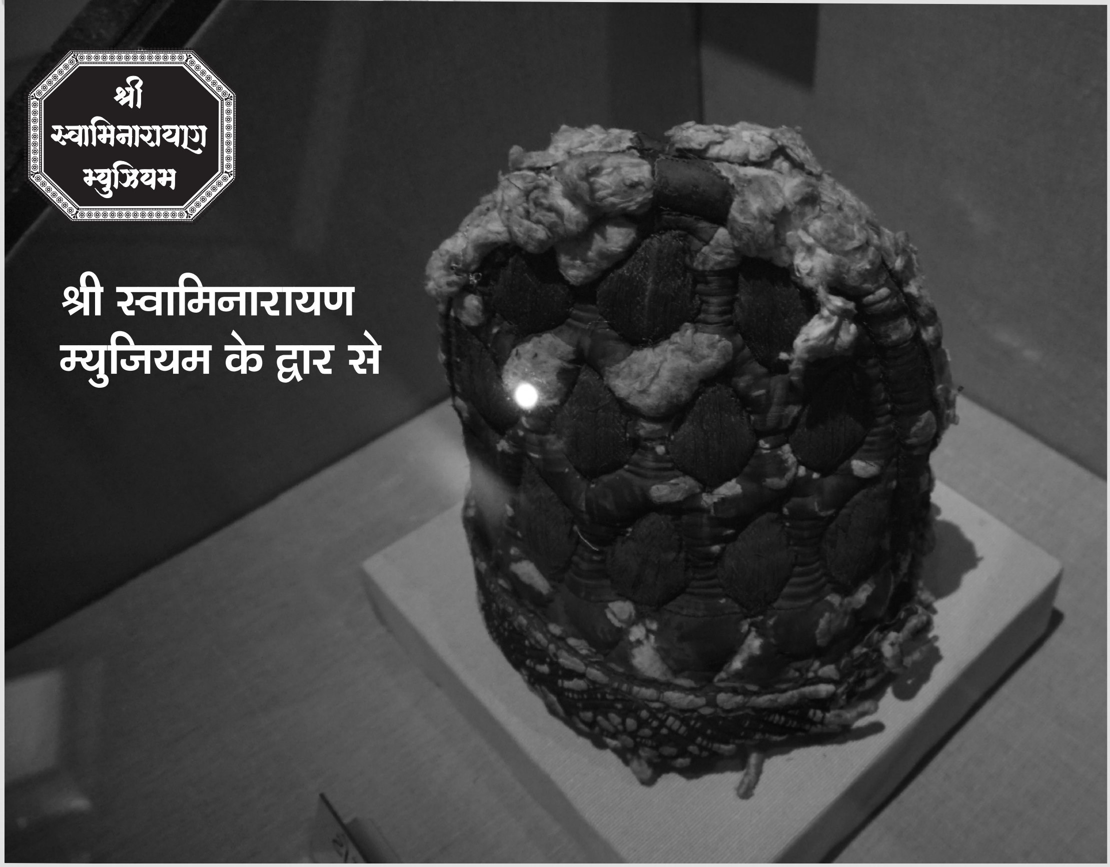

श्री
स्वामिनारायण
म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

इस वर्ष गर्मी और वर्षा अतिशय हुई है। उसी प्रकार ठंडक भी पडेगी। ऐसी पूर्व सूचना लोगो में आ रही है। भीषण ठंडक का सामना करने के लिये लोग अद्यतन हीटर की मशीन लगा रहे है। आज से सवा दोसो वर्ष पहले श्रीजी महाराज के समय भी कातिल ठंडी पडती थी। उसे वर्दाशत करने के अलावा बिजली और इलेकट्रीक के साधन नही थे। आप कल्पना कर सकते है।

श्रीजी महाराज इस भयंकर ठंड में भी भक्तो को खुश करने के लिये दूर दूर तक भ्रमण करते थे। सत्संगियो को दर्शन का सुख देते थे। ठंडक की रक्षा हेतु अलाव का प्रयोग करते थे। तथा साथ ही साथ लाल और नीले रंग की सूती कपडे तथा सोना के तार से बनी हुई बनात की टोपी धारण करते थे। स.गु. प्रेमानंद स्वामीए श्रीहरि के शयन के कीर्तनमें इसका खास उल्लेख किये है। अति लगन से कीसी हरिभक्तने श्रीजी महाराज को अर्पण कीये थे। श्री स्वामिनारायण म्युजियम में होल नं. ६ में दर्शन हेतु रखी गयी है।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि-नवम्बर-१९

दि. ०१-११-२०१९	किशनभाई भगवानभाई पटेल (मेथाणिया) बीलिया ।
दि. १६-११-२०१९	रोकन सतीषभाई पटेल - यु.एस.ए. ।
दि. १७-११-२०१९	धीरजलाल नागरदास पटेल - मेमनगर ।
दि. २०-११-२०१९	लालजीभाई गणेशभाई पटेल - भाऊपुरावाला
दि. २४-११-२०१९	(प्रातः) अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी माधवप्रसाददासजी और अ.नि.स.गु. शास्त्री स्वामी हरोगविंददासजी - ह. प्रविणभाई नटवरभाई पटेल कुहावाला - प्रेरक आनंदप्रसाद स्वामी, गुरुप्रसाद स्वामी । (दोपहर) जीतेन्द्रभाई बी. पढीयार (मिस्त्री) मूली प्रेरणा : स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी (छपैया और अयोध्या महंतश्री) गुरु स्वामी जगतप्रकाशदासजी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-नवम्बर-१९

रु. २१,०००/-	अ.नि. काशीबेन रावजीभाई नारणदास पटेल - असलाली
रु. २१,०००/-	अ.नि. रावजीभाई भाईलालभाई पटेल - वहेलाल
रु. ११,०००/-	डॉ. वसंतकुमार मनजीभाई वालु साहब - नारणफुरा
रु. ११,०००/-	जयंतीलाल बबलदास मिस्त्री - चाँदखेडा
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोशी - बोपल
रु. ५,०००/-	अ.नि. डॉ. जगदीश जेठी - नारणपुरा
रु. ५,०००/-	नीलकंठ लैण्डस्केप ऐसोसिएटस - गांधीनगर
रु. ५,०००/-	अ.नि. नारणभाई शंकरभाई पटेल - वागोसणा
रु. ५,०००/-	पटेल मणीभाई शंकरभाई - वागोसणा

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

तीन मित्र

- शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

कईबार ऐसी अपनी समझ और मान्यता का निर्माण हो जाता है कि जिससे द्वारा अपना कार्य हो रहा है वह १००% सच्चा ही हो । ऐसा माना नही जा सकता है । कभी-कभार ऐसा हो जाता है कि विषम अवस्था आने पर अपनी समझ और मान्यता झूठी सिद्ध हो जाती है । इस समय हम पश्चाताप करते है । इसके बारे में जानने के लिये यह छोटी सी बात सार्थक सिद्ध होगी ।

एक व्यक्ति के पास तीन मित्र थे । लेकिन उन तीनो में से दो के उपर अति विश्वास और लगाव था । उशका मानना था कि ये दो उसके सच्चे मित्र है । किसी भी कठिन स्थिति में ये दोनो अवश्य मदद करेगे । जब कि तिसरा भी मित्र था । लेकिन उसके प्रति लगाव कम था । उस से सम्बन्धखराब भी नही था । आवश्यकतानुसार बात करना, मिल जाने पर समाचार पूछ लेता था । समय अपनी गति अनुसार कार्य करता है । सबी के दिन एक समान कभी नही होते है । इस व्यक्ति को एक समय ऐसी कठिनाई आई की उसे कोई रास्ता दिखाई नही दे रहा था । उसे विश्वास हो गया कि उसे न्यायालय में ले जायेगे । और मुझे सजा भी प्राप्त होगी ।

कठिन समय में विचार आया कि मैं अपने मित्रो से सहायता प्राप्त करु । जिससे मैं बच जाउं । सर्व प्रथम अपने सबसे प्रिय मित्र के पास गया और विनती करने लगा कि आप हमारे साथ न्यायालाय में आयेगे तो हमे सजा से बच सकते है । लेकिन आश्चर्य ! उस मित्र ने सीधे न आने का उत्तर दे दिया । और कहाँ ''न्यायालय की बात तो दूर की है मैं आप के साथ एक कदम भी नही चल सकता हूँ । आप की तकलीफ आप जाने । यह व्यक्ति अधिक दुःखी हो गया । उसके पास समयाभाव था विना बहस किये । वह दूसरे मित्र के पास गया । उसे लगा यह मित्र अवश्य सहायता करेगा ।

दूसरे मित्र के पास जाकर सहायता माँगी तब दूसार मित्र बोला - ''देखो मित्र आप कष्ट में है ये बात सत्य है । मेरा मन है आप की सहायता करु . आप का साथ न्यायालय के दरवाजे तक दूँगा । बाद में आप को सम्भालना होगा । न्यायालय के अंदर आना मेरे लिये असम्भव है । दूसरे मित्र से भी ऐशी आशा नही थी । दो दो मित्र जो इसके काफी करीब थे । ऐसी उम्मीद वह उनसे नही करता था । मदद न मिलने के कारण उसे तीसरा मित्र याद आया । वह सोचने लगा मेर प्रिय दो मित्रो ने तो साथ दिया नही इस मित्र के साथ सामान्य भाव रखता था । वह मेरी सहायता करेगा कि नही ? सोचता है कि जो होगा होने दे, उससे भी मिल लेते है ।

ऐसा विचार कर वह दुःखी व्यक्ति तीसरे मित्र के पास जाकर अपनी परेशानी बताया । देखे तीसरे मित्रका उत्तर देखो मित्र ! तुम्हारे जीवन में तकलीफ आयी और आप ने मुझे याद किया है । तो आप का मित्र होने के कारण मेरा कर्तव्य है कि आप की सहायता करु । मैं आप के साथ न्यायालय में आखिर बचाने का प्रयास अवश्य करुँगा । दोनो मित्र न्यायालय में गये । मित्र न्यायालय में जाकर पूर्ण तरफदारी करके न्यायाधीश के सामने बचा लिया और उसको निर्दोष करार करा दिया । तीसरे मित्र के कारण यह व्यक्ति बच गया था । उसे पश्चाताप हुआ जिसे मैं कम ध्यान देता था । वही मित्र हमारे काम में आया ।

मित्रो इस बात का आध्यात्मिक रहस्य अधिक है । उसके बार में जानकारी प्राप्त करे ।

मनुष्य के जो तीन मित्र है । क्रमानुसार १. सम्पत्ति, २. सम्बन्धी, ३. सत्कर्म है । हम पूरे जीवन पहले दो मित्रो पर ध्यान देते है । लेकिन तीसरा मित्र सत्कर्म उसकी अवगणना करते है । मनुष्य का जब अंत काल नजदीक आता है । तो पहला मित्र सम्पत्ति एक कदम भी नही चलता है । मृत्यु के बाद तुरंद सम्पत्ति साथ छोड देता है । दूसरा मित्र अथवा सगे-सम्बन्धी श्मसान तक जाते है । वे भी साथ छोड देते है । लेकिन तिसरा मित्र जिसकी पहले से अवगणना करते है ।

ऐसा सत्कर्म अंत तक साथ देता है। भगवान के न्यायालय में सत्कर्म रुपी मित्र निर्दोष साबित करने का प्रयास करता है। लेकिन कठिन बात यह है कि यह समझते-समझते जिंदगी का अन्तिम चरण आ जाता है।

जितना ध्यान मानव सम्पत्ति कमाने के पीछे, उसे संभालने में रिस्तेदारो के आगमन में ध्यान देता है। उतना ध्यान यदि भजन-कीर्तन कथा-वार्ता, सेवा ध्यान आदि सत्कर्मो पर नही देता है। कठिन समय में सत्कर्म ही बचाता है ।

मित्रो ! स्वामिनारायण भगवान की कृपा से हमे यह मानव जन्म मिला है। ऐसे अच्छे सत्संग का योग मिला है। तो जीव का सच्चा मित्र सत्कर्मो द्वारा भगवान को खुश करले तो जीव का सहज मोक्ष हो जाता है।

●

भजन का प्रताप

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

भगवान के नाम की अपरम्पार महिमा है। नाम सदैव स्मरण रखने से मन निर्मल हो जाता है। जीव के अन्दर के शत्रु काम, क्रोध, मद, लोभ, नाम स्मरण से दूर हो जाता है। भगवान के नाम का इतना प्रताप है कि विषय वासना को नष्ट कर देता है। और मन को निर्मल बना देता है। यह प्रसंग नाम-स्मरण की महिमा का ज्ञान करायेगा।

राजा-रजवाडा समय की यह कहानी है । वड़ा राजमहल उसमें राजा-रानी तथा उनकी संतान निवास करते थे । और अनेक सेवा हेतु सैंकडो नौकर-नौकराणियाँ, सिपाही नियुक्त थे। सब अपने पद अनुसार सेवा करते थे।

एक परिवार सेवा के कार्य लगा था । वह व्यक्ति सिपाही के पद पर कार्यरत था। उसकी औरत रानी की दासी के रुप में नियुक्त थी। वह समय ऐसा था कि रानी और उनकी बेटीयाँ परदे के अंदर रहती थी। सामान्य व्यक्ति उन्हे देख नही सकता था। ऐसा उनका प्रोटोकाल था। एक बार किसी कार्य बस सिपाही महलमें गया । उसकी नजर राजा की रुपवान कन्या पर पड गयी । नजर पडना तो सामान्य घटनाथी । लेकिन सिपाही राजकुमारी को देखकर मोहित हो गया। और उसके मन में उससे विवाह करने की प्रबल भावना जागृत हो गयी। बुद्धि और मन में भ्रम आ जाने से उसे खाना अच्छा नही लगता था। कार्य में मन भी नही लगता था। सतत कन्या की चिंता में मग्न रहता था । वह जानता था कि राजकुमारी के साथ विवाह होना अनिश्चित है फिर भी वह उसके मोह में अधिक दुःखी रहने लगा।

सिपाही की औरत पतिव्रताथी । वह अपने पति का बदला व्यवहार देखकर वह दुःखी हो गयी । पति से दुःखी होने का कारण पूछी, पति बोला मुझे एसा, रोग लगा है कि उससे कोई टीक नही कर सकता है। सतत चिंतन के कारण मेरी घुट-घुट कर मृत्यु होगी। तभी जागर मै सुखी हो सकता हूँ।

अवस्था एकदम खराब होने लगी थी । सिपाही को भोजन अच्छा नही लगे । नींद नही आती थी । पत्नी विचार करती है कि संसार में कुछ असम्भव नही है। ऐसा कौन सा दुःख या रोग है जो हमारे पति को परेशन कर रहा है। अधिक पूछताछ करने पर पतिने कहा कि राजकुमारी मुझसे शादी कर ले तो मै ठीक हो जाऊगा। मैं उसके विना रह नही सकता हूँ। यह बात सुनकर पत्नी को भी लगा यह तो बात असम्भव है ।पति के दुःख के कारण पत्नी भी दुःखी रहने लगी।

दासी को दुःखी देखकर रानी को आश्चर्य हुआ . वह दुःख का कारण ज्ञात करने के लिये दासी से पूछी। प्रारम्भ में बात को टालना चाही । लेकिन रानी के आग्रह एवं पति के दुःख को देखकर पति की बात पत्नी ने सभी को बता दिया।

रानी ज्ञानी थी। उसने विचार किया। कुछ ऐसा करे कि सेवक के परिवार का दुःख दूर हो सके। रानीने दासी से कहा, कि मैं तुम्हारे पति को कन्या देने के लिये में तैयार हूँ लेकिन एक हमारी शर्त है। उसे तुम्हारे पति को पूरा करना पडेगा । तुम्हारा पति छ महिने गाँव के बाहर रहकर मेरे अनुसार भोजन आँख बंद करके भगवान के नाम का स्मरण करना होगा । किसी प्रकार का पाप नहीं करना है । यदि तुम्हारा पति इतना नियम का पालन करे तो छ महिने के बाद में अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे पति के साथ पूर्ण कर देगे।

दासीने यह बात अपने पति को बताई। वह मोह वस छ महीने में कन्या मिल जायेगी। इस तर्क पर वह तैयार हो गया । वह नकली तपस्वी बनकर गाँव के बाहर आँख बंद करके नामस्मरण करने लगा । रानी एक बार सादा सरल

(पेईज नं. २०)

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "सत्संग से जुडे रहेगे तो जीवन में सब कुछ प्राप्त होगा"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

सभी को महाराज के चरित्र के दिव्य कथा सुनने का पाँच दिन से लाभ लिये न ? क्या कथा सुनने से महाराजजी जीवन में आ सकते है ? नही हम वैसे हमें वैसा बनना पडेगा । हमें यह 'सत्संग' श्री नरनारायणदेव 'सतशास्त्रो', 'कल्पवृक्ष' समानरुप से मिला है । उनकी छत्र छाया में रहकर सभी संकल्प सिद्ध होता है । और अनन्त: मोक्ष की प्राप्ति होती है । संसार में किसी एक जगह पर जिन लोको को जाना हो तो सभी का लक्ष्य एख है ? लेतिन अलग-अलग रास्ते से पहुँचना होता है । किस रुप में ? उदाहरण स्वरुप हम सभी को यहाँ हर्षद मंदिर जाना था । लेकिन प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग क्षेत्र से आने के कारण अलग-अलग रास्ते से आये है । मंदिर के पास सभी का रास्ता एक हो जाता है । हम सभी का लक्ष्य एक है । 'भगवतप्राप्ति' लेकिन इसके लिये मार्ग अलग-अलग है । क्योंकि ? किसी को भजन करना पसंद है । किसी को कथा-वार्ता किसी को दासत्व, किसी को मंदिर की सफाई अच्छी लगती है । भगवान के पास जाने के अलग-अलग मार्ग है । लेकिन सत्संग में आने पर सभी को रास्ता मिल जाता है । यहाँ पर आने के लिये हम सभी को साधन मिल जाता है । जिसको जो मार्ग चाहिए मिल जाता है । अर्थात् सत्संग का मार्ग पकडे रखेगे तो जीवन में सब कुछ प्राप्त हो जायेगा । श्री नरनारायणदेव के दर्शन मात्र से अपने जीवन के सभी कार्य पूर्ण हो जाते है । लेकिन वह दर्शन कैसे करे ? दर्शन करते समय अपने और श्री नरनारयणदेव के मध्य कोई दूसरा नही आना चाहिए । कई बार दर्शन करने जाने पर अपनी आँख नीचे झुक जाती है । भगवान के आदर हेतु नजरे झुक जाती है या पंचाग प्रणाम करने से नजरे नीचे झुक जोती है । ये बात अच्छी है । स्वाभाविक भी है । महाराज के पास अपने आँखे झुक जाती है । कभी-कभी ऐसा होता है कि जीवन के जाने-अनजाने कर्म याद आ जाते है । इस शर्म से आँखे झुक जाती है । ये अपने जीवन की भूलो की याद दिलाता है । तो उस समय दु:खी नही होना चाहिए ? अपनी भूलो को स्वीकार करे । यह महाराज संकेत देते है । यह अच्छी बात है । क्योंकि ? अपनी भूलो को हम सुधार सकते है । भूल सुधारने का अवसर मिलता है । पुन: भगवान के समझ नजर न झुके ऐसा बनने का प्रयास करना चाहिए । कई लोग तो घर में भी झगड कर आते है । दूसेर को दु:ख देकर आये हो । तो भी भगवान के सामने दर्शन करने आते है तब वह दु:खी नही होते है । इसके अर्थ यह है कि भगवान उन्हें संकेत नही देते है । क्योंकि भगवान को पता होता है कि यह व्यक्ति सुधरने वाला नही है । क्योकि भगवान को पता है कि दोषी व्यक्ति दूर जाता है । व्यक्ति का स्वभाव जल्दी बदलता नहीं है । उस स्वभाव से अपना कर्म करता रहता है । हमारे अंदर निरन्तर ''कामना'' पैदा होती है । उसे पूर्ण करने के लिये कार्य सतत करता है । इसी प्रकार कर्म का फल मिलता है । भोगना तो पडता है । जन्म जन्मान्तर से ये क्रिया चालू रहती है । और यही कर्म अपना प्रारब्धबन जाता है । कुछ कर्म को करके इसे बदला जा सकता है । लेकिन कुछ प्रारब्धको टाला नहीं जा सकता है । इस प्रारब्धको दूर करने का उपाय यहै उदाहरण स्वरुप किसी अपराधी को दण्ड मिला हो । सुप्रीम कोर्ट के अनुसार दण्ड तो भूगतना ही पडेगा । सुप्रीम कोर्ट से बड़ा कोई न्यायालय नही है । लेकिन राष्ट्रपति के सामने आवेदन करने पर सजा कम या माफ हो सकती है । उसी प्रकार अपने जो कर्म प्रारब्धकर्म में परिवर्तीत हो जाते है । उसे पुरुषार्थ से बदला नहीं जा सकता है । उसे भगवान की कृपा से बदला जा सकता है । इसके लिये भगवान की आज्ञा में रहना पडेगा । मायारुपी जाल संसार में फैला हुआ है । भगवान के चरण में रहकर बचा जा सकता है । जैसे माछीमार समुद्र में जाल डालता है । कुछ मछलियाँ जाल में नही फसती है जो माछीमार के पैर के पास होती है । इसी प्रकार यदि हम हमेशा भगवान के चरणो में रहे तो हमें सुरक्षा प्राप्त होगी सत्संग से रक्षा मिलेगी ।

श्रीहरि आप सभी को बदल दे। ऐसी हमारी श्री नरनारायणदेव के चरणो में वंदना है।

•

पंच विषय

– सांख्ययोगी कोकिला (सुरेन्द्रनगर)

भगवान सम्बधित पंचविषयो से हृदय में प्रकार होता है। और संसार सम्बन्धित पंच विषयो से हृदय में अंधकार व्याप्त हो जाता है। पंचविषय हृदय में तरंग रुप में आता है और हृदय में प्रवेश करके एटलांटिक महासागर जैसे विशाल बन जाता है। इस जीव को भगवान का सुख नही मिलता है। उसका क्या कारण है ? वह विषयो से पूर्ण होता है। विषयो से जुडने पर कोई जगह नही मिलती है। भगवान के धाम जाने के लिये विषय मार्ग पर नही चलना चाहिए। और जो जा रहा है उसकी तरफ देखना भी नही चाहिए। पंच विषय जब जहर लगे। तब भगवान की भजन कर सकते है।

अनंत जन्म के बाद लाख चौरासी योनि में भटककर मनुष्यदेह का अवसर मिला है। चौरासी के चक्कर में मनुष्य विराम की स्थिति नही पाना चाहता है। सत्संग तो करना है। भगवान की बजन भी करना है। पंचविषय का त्याग नहीं करना है। तो भगवान का भजन कैसे करेगे। विषय वासना मूल मे है तो कैसे दूर किया जाये। यह सच्चे संत के सानिध्य से दूर किया जा सकता है। लोग भगवान के भजन से दूर हो गये है। उसे पुनः ज्ञान में लाना संत का कार्य है। विषय वासना ही जीव को भगवान से अळग करती है।

पंच विषय में सुख है। ऐसा किसी संतने लिखा या कहा नही है। विषयी जीव के साथ से मनोवृत्ति विराट रुप धारणकर लेती है। मदारी के सर्प का पिटारा देखकर चूहाँ पूरी मेहनत करता है। लेकिन पिटारा खुलते ही मूस सर्प का भोजन बन जाता है। उसी प्रकार संसार रुपी पिटारा में से जीव कुछ पाना चाहता है। लेकिन माया रुपी सर्प उसे भोग बना लेता है। हमको लगता है हम भोग कर रहे है। लेकिन भोग खुद हमे भोग बना लेता है। प्रेमांद स्वामी ने कीर्तन में लिखे है कि ''सौ हरिभक्त रे, रहेवुं होय मारी पास, तो तमे मेलजो रे, मिथ्या पंच विषयनी आज्ञा इस लिए भगवान के धाम में, भगवान के समीप रहना हो तो पंच विषय पर विजय प्राप्त करना होगा। तालाब के पास वाला वृक्ष पानी तालाब से सोख लेका है। उसी प्रकारपंचविषय अच्छे सद्गुणो को सुखा देता है।

चीभका (फल) पकने पर फट जाता है। तथा वीज बाहर विखर जाते है। अधिक विषय वासना से मनोवृत्ति खराब हो जाती है। जिससे सद्गुण बाहर निकल जाता है। इस लिये जिसे पूर्व दिशा में जाना हो बाँस को पश्चिम की तरफ मोडना पडता है। इस प्रकार जिसे भगवान के सामने जाना है उसे संसार रुपी बाँस को मोडना पडता है। चिंतामणि नाग के बीच में पडी रहती है। उसे प्राप्त करने का क्या मन करता है ? नही उसी प्रकार पंचविषय में दोष दिखाई देता है। लेकिन भोगन का मन नही करता है।

हम लोग अनुभव कर सकते है कि कई बदमास पशु छुटकर किसी के खेत में खाकर अपनी जगह पर आ जाते है। खूटे पर अच्छा चारा मिलता हो फिर भी वह तोडकर बाहर का चारा खाकर आ जाता है। वह रुक कैसे सकता है ? हम लोग भी ऐसा ही करते है। ऐसा सत्संग का ज्ञान भी है। धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री मिले है। धर्मकुल आश्रित संत मिले है। भजन-भक्ति करते है। जैसा चाहिए वैसा मिला भी है। लेकिन अनंत जन्मो से कुसंग में रहने की आदत हो गयी है। इस लिये सत्संग के साथ, मेल-मिलाप-भजन-भक्ति का साथ छोडा नही जा सकता है। सत्संगी तो काफी अच्छे होते है। लेकिन टी.वी. में सीरियल देखना ही पडता है। सिनेमा कभी देखना पडता है। चारपाई वार्ता राजनीति तो करना पडता है। ये पुरानी आदते छोड़ नही सकते है।

भगवान के मंदिर के रुप में श्रीजी महाराज ने अच्छा स्थल दिये है। वहाँ पर अच्छे भोजन की व्यवस्था भी है। जीवात्मा का खुश है। जो कथा-वार्ता, कीर्तन, धुन, नाम माला, इत्यादि भोजन दिये है। लेकिन व्यक्ति अपनी आदत छोडे तो ? जीवात्मा पंचविषय छोडे तो भगवान की शरण में आये। श्रीजीमहाराज के आज्ञा में दृढ रहे तो जीवात्मा अक्षरधाम में जा सकता है। लापरवाह होने पर समाप्त हो जाता है। इस लिये लापरवाही नही करे।

मदारी लोग बंदर को पकडने के लिये प्रयोग करते है। एक सकरे गले वाला गगरी लेते है। उसमें बंदर को दिखाई दे ऐसे खाद्य पदार्थ को डाल देते है। फिर स्वयं दूर बैठकर आगे की घटना का अवलोकन करते है। बंदर तो रास्ता ही देख रहा था। वह गगरी देखकर सकरे मुँह वाले पात्र में

लालच वस हाथ डालकर मुट्ठी भर लेता है । लेकिन उसका हाथ उसमें से नही निलकता है । साथ में खाद्य पदार्थ को छोडना भी नही है । तो अब क्या करे ? यदि सामान छोड दे तो हाथ बाहर निकाल सकता है । उसी प्रकार हमारा जीवन भी इसी तरह का हो गया है । ये संसार रुपी पंचविषय गगरी है । इस पंच विषय का परित्याग तो करना ही पडेगा । न करने पर अक्षरधाम की प्राप्ति कैसे होगी ? ये दोनो एक साथ कैसे मिल सकते है. विषय की आशा छोडने पर ही जीवात्मा अक्षरधाम की प्राप्ति कर सकता है ।

यही पंचविषयने कई लोगो के जन्म को खराब कर दिया है । कभी सुरक्षित भगवान के पास जाने नही दिया । हम सब को बडी हानी में पहुंचा दिया है । इसके बाद उससे वैर की भावना कभी रखते है ? इस जीव को संतोष ही नही है । स्वयं के पास दो कार, दो घर हो तो भ दूसरे का अधिक देखकर दुःखी हो जाता है । वस्तु होने पर भी व्यक्ति दुःखी रहता है । मंदिर में नही आने का दुःख कभी नही करते है ।

शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंधये पांच विकार (पंचविषय) में से काम, क्रोध, मद, लोभ, सम्मान, स्नेह आदि शत्रु बनते है । जब तक ये विकार प्रबल है । तब तक शुद्ध चैतन्य स्वरुप को जानना कठिन है । शास्त्र पुराण में बड़े-बड़े महात्मा लोग लाखो वर्ष तक तपस्या किये लेकिन साधारण विय आ जाने पर भ्रमित हो जाते है । अपने स्वरुप को पहचान नही सकता है । ब्रह्म रुप होने मे शरीर मुख्य कारक है । शरीर में पंच विषय आ ही जाता है। उसे देह अभिमान रुपी शत्रु भी आ जाता है । जो सत्संगी होते है । उससे पंच विषय मुख्यतया हट जाता है । जीवात्मा जब कथा-वार्ता, भजन मे ध्यान दे तो पंच विकार नही आ सकता है । ये कार्य सच्चे संत के सानिध्य में ही हो सकता है। सत्पुरुषो की कृपा से पंचविषय पर विजय प्राप्त कर सकते हे । भगवान की कथा-वार्ता-ध्यान और भजन करने से पंचविषय को जीतना नही पडता है । बल्कि जीत मिल ही जाती है ।

अनु. पेईज नं. १७ से आगे

भोजन देती थी । शेष समय प्रभु स्मरण में व्यतीत करने लगा । प्रारम्भ में वासना को जोर प्रभखी बना रहा । लेकिन नाम स्मरण से दिव्य शक्ति के कारण उसके अन्दर परिवर्तन आने लगा । उसके मन-बुद्धि में शांति आने लगी । नाम-स्मरण से अन्त रमें परमात्मा का दर्शन होने लगा । और आध्यात्मिक जगत में मस्त हो गया । अब तो परमात्मा नाम की लत लग गयी थी । वह धन्यता का अनुभव करने लगा ।

शर्तनुसार ६ महीने का समय समाप्त हो गया । जिस स्थान पर सिपाही नाम स्मरण कर रहा था । उसी जगह रानी कन्या लेकर आयी । और बोली ''जिस लिये तुम तपस्वी बने हो, उस राज कन्या को मैं साथ लाई हूँ । शर्तानुसार मेरी कन्या आप को दे रही हूँ ।

यह सिपाही अन्तर से निर्मल बन गया था । अब उसे आँख खोलने का भी नही मन करता है । मैं भगवान के दर्शन मे खुश हो गया हूँ । आप की कन्या मेरी पुत्री के समान है । किसी राजकुमार के साथ विवाह हो वही योग्य होगा । मेरी भूल के लिये मुझे क्षमा करे । आपने जो मुझे मार्ग बताया उसके लिये मैं आप का आभारी हूँ ।

मित्रो ! देखा न, मोह-माया से दुःखी होकर जीव सकाम नाम स्मरण करने लगा । मन के सभी विकार दूर हो गये थे । वह पवित्र आत्मा बन गये ।

हमारे ईष्टदेव श्रीहरि भी सारंगपुर के चौथे और पाँचवे वचनामृत में वासना से दूर रहने के लिये यही उपाय बताये है । वचनामृत को प्रसाद रुपी शब्द में जाते है ।

- भगवान के भक्त को वासना का बल देखकर हिम्मत नही हारनी चाहिए । आनंद में भगवान का भजन करना चाहिए । वासना दूर करे की उपाय सोचते रहना चाहिए । भगवान और संत में दृढ विश्वास रखना चाहिए । (सा.-४)
- महात्मा के साथ भक्ति करने पर वासना दूर हो जाती है । कल्याणकारी गुण सबके हृदय में आ जाती है । भगवान की भक्ति वासना दूर करने का सब से बड़ा साधन है ।...(सा.-५)

इस बात की सदा स्मृति रखेगे तो सदैव आनंदित रहेगे और भगवान की सुख शांति प्राप्त करेगे ।

उत्तरायण के पुण्य (झोली) पर्व

नाम : ....

पता : ....

फोन नं. : ....मो. : ....

उत्तरायण पुण्य पर्व

द. १४-१--२०२० उत्तरायण मकर सक्रांति के दिन श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पधारे तब ये कार्ड में अपने संकल्प अनुसार मूल्य भर के कोठार ओफिस में रसीद प्राप्त कर लेना । चेक या ड्राफ्ट से या मन्युओर्डर से भेज सकते हो ।

विगत	मूल्य	वजन	प्रति ५ कि. का मूल्य	आपकी सेवा (रु. में)
चावल	३०५०	१०० की.	१५५	
गेहू	२०००	१०० की.	१००	
मग	८०००	१०० की.	४००	
तल	२४००	२० की.	६००	
चनादाल	२४००	१०० की.	६००	
तुवेरदाल	१००००	१०० की.	५००	
मोगरदाल	७२००	१०० की.	३६०	
शुध्धघी	६०००	१ डीबा	२०००	
तेल	१३००	१ डीबा	४३०	
गुड	५०००	१०० की.	२५०	
चीनी	४१००	१०० की.	२०५	
कुल	५१४५०		५६००	

यह दान आप वस्तु या रोकड के रुप में अन्यथा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के नाम से चेक या ड्राफ्ट के रुप में भी दे सकते हैं।
स्थान : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद,
दूरभाष : ८३३८००१६६६, ९९०९९६७१०४

महंत स्वामी
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी के
श्रीहरि स्मृति सहित जयश्री स्वामिनारायण

सत्संग समाचार

वचनामृत उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ संकल्प से पूज्य श्रीराजा के साथ-सहकार से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.पू. गादीवाला की हवेली में श्रीमद् वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २६-११-२०१९ से २८-११-२०१९ तक वचनामृत त्रिदिवसीय पारायण सांख्ययोगी बहनो द्वारा पूर्ण किया गया । अहमदाबाद शहर की बहनोने विशाल संख्या में शांय २ से ५ बजे के मध्य प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और पूज्य श्रीराजा के शुभ सानिध्य में कथामृत का पाठ किये । वित कई वर्षो से प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की प्रेरणा से बहनो के सत्संग में अधिक जागृति आयी है । भगवान को पहचाने है । समाज उपयोगी कार्यभी अपने बहने कर रही है । यह आप सब को ज्ञात है । ता. २९-११-२०१९ को हवेली में बाल युवतीयों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम करके अध्यात्म का ज्ञान दी थी । और अपने कला का परिचय भी दी थी । प.पू. लालजी महाराजश्री सत्संग की प्रवृत्ति में अविरत लगे हुए है । चाहे गाँव या शहर हो, वे समय पर जाकर हरिभक्तो को खुश करते है । साथ ही साथ मानव सेवा, समाज सेवा की प्रवृति भी कर रहेहै ।

इन सभी प्रवृत्तियो में प.पू. गादीवालाश्री की आज्ञा से और पूज्यश्रीराजा के सुंदर मार्गदर्शन-प्रेरणा से बापूनगर में अपने रुपमबेन, हिरलबैन और धरतीबेन तथा घाटलोडिया की अरुणाबेन तथा साथ की बहनो को जितना धन्यवाद दे कम है । वर्तमान समय में नरनारायणदेव गादी के अर्न्तगत हजारो बहनो की युवक टीम अत्याधिक सक्रिय और निष्ठावान तैयार हो रही है । इस अवसर पर बडी बहने, युवतियों और बालिकाओने जिस परिश्रम के साथ सेवा, तत्परता और सूझ-बूझ से प्रवृत्ति की है । उसे देखकर पपू. गादीवालाश्री हृदय से खुश हुए थे । ऐसी सभी बहने उसके लिये गौरव है ।

ता. ३०-११-२०१९ के दिन श्री स्वामिनारायण बाग से श्री नरनारायणदेव के दर्शन के लिये पैदल वाले लोग प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री हजारो संत-हरिभक्तो का विशाल समूह उसी प्रकार प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री हजारो बहनो के साथ प्रातः ६-३० से पदयात्रा से प्रस्थान की थी । छोटे बच्ची से लेकर वृद्धावस्था वाली बहने घर पर ताला लगाकर सपरिवार यात्रा में भाग लिये थे । और कालुपुर मंदिर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके प.पू. लालजी महाराजश्री मंदिर के प्रांगण में सामुहिक होमात्मक महापूजा की शुरुआत कीथी । १००० जितने हरिभक्तोने महापूजा में भाग लिये थे । मंदिर के प्रसादी के चौक में प.पू. गादीवालाश्री और पू. श्रीराजा महापूजा में बैठे थे ।

ता. २९-११-२०१९ अहमदाबाद के प्रत्येक एरिया के २५०० के अलावा ट्राफीक पुलिस के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री साथ रहकर युवक मंडल द्वारा प्रसादी और पानी का बोतल सभी को दिये ।

इस पदयात्रा में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और स्वयं सेवक मंडल के अथाक परिश्रम और प्रयत्न से छोटे-बडे सभी हरिभक्तो द्वारा सुंदर व्यवस्था किये थे । इस सभी सेवाओ के लिये सभी सेवाभावी हरिभक्तो को धन्यवाद मिले है ।(श्री नरनारायणदेव युवति मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री रंगमहोल में विराजमान श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव

सर्वोपरी श्री रंगमहोल में विराजमान घनश्याम महाराज का पाटोत्सव कार्तिक सुद-१२ शनिवार ता. ९-११-२०१९ के दिन प्रातः ७ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक विधिवत रुप से पूर्ण हुआ था । जिस के यजमान प.भ. जयंतीभाई सोनी की चि. भानजे का परिवार लाभ उठाया ।

इसके बाद श्री घनश्याम महाराज को छप्पन भोग अन्नकूट का भोग चढाया गया था । पूजारी देव स्वामीने भगवान श्री घनश्याम महाराज को सुंदर अलौकिक परिधान और स्वर्णालंकार पहनाकर दर्शन कराये थे । यजमान परिवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अधिक खुश होकर आशीर्वाद प्रदान किये थे ।(कोठारी शा. नारायणमुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलोदरा (माणसा)

परमकृपालु श्री नरनरायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर से-२) के सुंदर मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलोदरा का पाँचवा पाटोत्सव ता. ७-११-१९ को उल्लास पूर्वक हुआ ।

इस अवसर पर ता. ३-११-१९ से ७-११-१९ के बीच श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पाराय स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) वक्ता पद पर संगीत के मधुर वातावरण में पूर्ण हुई । व्याख्यानमाला के वक्ता श्री स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने श्रीहरि की महिमा समझाये थे ।

सभा का संचालन स.गु. शा.स्वा. व्रजभूषणदासजी (कोटेश्वर) ने किया । इस अवसर पर तुलसी विवाह और शाकोत्सव भव्य रुप से मनाया गया । गाँव के प्रत्येक हरिभक्तो ने छोटी-बड़ी सेवा किये थे । यजमान पद का लाभ भी उठाये थे । तीर्थ स्थानो से स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री हरिकृष्णदासजी (कालुपुर मंदिर) आदि संत आये थे। गाँव के सभी हरिभक्तोने अलौकिक लाभ उठाया । (शा. व्रज स्वामी - कोटेश्वर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीग्राम का ९ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनरायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमदासजी (गांधीनगरकी) प्रेरणा एवम् श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीगाम के ९ वे पाटोत्सव को ता. १२-११-१९ के दिन प.भ. बिपीनभाई वल्लभभाई पटेल, प.भ. गुंजन बिपीनभाई पटेल तथा सम्पूर्ण सत्संग समाज कालीगाम की और से उल्लास पूर्वक मनाया गया था ।

पू. महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी और जेतलपुर धाम के पू. संत मंडल द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक, कीर्तन-धुन और अन्नकूट की आरती की गई थी । प्रारम्भिक सभा में संतो ने श्रीहरि की सर्वोपरि महिमा का ज्ञान कराया । (शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) कार्तिक मास में तुलसी विवाह

परमकृपालु श्री नरनरायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा समस्त सत्संग समाज गांधीनगर के सुंदर आयोजन द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) में ता. १०-११-१९ दिन रविवार को भव्य तुलसी विवाह मनाया गया था । इस अवसर पर शायं अपने प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । तुलसी विवाह में वरपक्ष, कन्यापक्ष और मामा का पक्ष यजमान रुप में हाजिर थे । यजमानो को आशीर्वाद दिये । ठाकुरजी की शोभायात्रा माताजीकी शोभायात्रा भजन के साथ निकाली गयी थी . हजारो धर्म प्रेमी हरिभक्तो ने तुलसी माता के विवाह का दर्शन किये थे । और प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए । कालुपुर मंदिर के स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का संत मंडल आया था ।(शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी तथा क्रम शक्ति पार्क द्वारा तुलसी विवाह

परमकृपालु श्री नरनरायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) और संत मंडल के सुंदर सहयोग प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी और कर्म शक्ति पार्क द्वारा आयोजित भव्य तुलसी विवाह ता. १२-११-१९ मंगलवार के दिन प्रात: १० बजे से रात्रि ८-१० तक मनाया गया था । इसमें कन्या पक्ष के यजमान प.भ. अरविंदभी रवजीभाई दोंगा परिवार और वर पक्ष में ययमान प.भ. प्रफुलभाई धनजीभाई गेलाणी परिवार और मामा पक्ष में यजमान प.भ. रमणीकबाई भीखाभाई सरधारा, भाविनभाई दुलाभाई सावलिया, किशोरभाई मनुभाई और अश्विनभाई शामजीभाई ने लाभ लिया था । अंत में सभी लोग भोजन ग्रहण करके धन्य भागी बने थे ।(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव एवम् शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनरायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री पी.पी. स्वामी के सुंदर मार्गदर्शन में समस्त सत्संगि समाज मुबारकपुर का ९ वाँ पाटोत्सव शाकोत्सव ता. १७-११-१९ को रविवार के दिन प.पू. लालजी महारजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक पूर्ण किया गया था । संतो द्वारा

कथा वार्ता, धुन, कीर्तन आदि किया गया है।

पाटोत्सव के यजमान श्री अ.नि. कलाबेन बकोरभाई पटेल परिवार था । कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी गांधीनगर, कोटेश्वर और नारणघाट से संत पधारे थे । अंत में सभी लोगो को लालजी महाराजश्री ने सबको आशीर्वाद प्रदान किये थए ।(समस्त सत्संग समाज – मुबारकपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) २० वाँ पाटोत्सव और स्वता पारायण

परमकृपालु श्री नरनरायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर से-२) के सुंदर मार्गदर्शन में समस्त सत्संग समाज से-२ द्वारा प.भ. विपीनभाई मणीभाई पटेल (कालीगाम वाले) के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) का २० वाँ पाटोत्सव विधिवत मनाया गया।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २८-११-१९ से ता. १-१२-१९ तक श्रीमद् भागवत दसवा स्कंधत्रिदिवसीय रात्रिय पारायण स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्ता पद से संगतमय वातावरण में पूर्ण हुआ । कथा के बीच पोथीयात्रा, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट दर्शन प.पू. आचार्य महाराजश्री का दर्शन, संतो का दर्शन, आदि उल्लास पूर्वक मनाया गया।

सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. ब्रजभूषणदासजी (कोटेश्वर) तथा महंत शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नाराणघाट)ने किया था।

ता. १-१२-१९ को प्रातः प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार, अभिषेक, अन्नकूट आरती पूर्ण की गयी थी।प्रासंगिक सभा में स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर) तथा स.गु. महंत शा. स्वा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) एवम् स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ठाकुरजी की महिमा बताये थए । सम्पूर्ण सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किया । बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे। सभी हरिभक्तोने कथा सुना, देव दर्शन किया, धर्मकुल का दर्शन किये । प्रसाद प्राप्त करके धन्य हुए । (शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी – गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमाशणा द्वितीय पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनरायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अ.नि. स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजी (कालुपुर) तथा कोठारीश्री एवम् श्री नरनारायणदेव युवक मंडल धमासणा के सुंदर प्रबन्धद्वारा नंद संतो के महान संत स.गु. गुरुचरणरतानंद के जन्म स्थल जहाँ पर सम्प्रदाय के महान संत स.गु. श्री महानुभावानंद स्वामीने सर्व प्रथम मंदिर बनवाये थे । धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर के दूसरे पाटोत्सव के उपलक्ष्य में २३-११-१९ से २७-११-१९ के बीच श्री हरिस्मृति पचान्ह रात्रीय पारायण स.गु. महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी के वक्त पद से पूर्णहुई । इस अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट कथा शाकोत्सव धर्मकुल दर्शन, संतो की प्रेरक वाणी आदि कार्यक्रम पूर्ण हुए ।संहिता पाठ में स.गु. स्वामी बालस्वरुपदासजी थे । तीर्थो से सतं स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, हरिचरण स्वामी (कलोल) शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी आदि संत आये थे । ता. २७-११-१९ को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । उनेक द्वारा ठाकुरजी की आरती शाकोत्सव विधिपूर्ण की गई । अन्त में सभा को आशीर्वाद दिये । गाँव के सभी छोटे-बड़े भक्तो की छोटी-बडी सेवा मिली थी । सभा का संचालन शा. गोपाल स्वामीने (प्रांतिज) ने किया था ।(कोठारीश्री और उर्मित पटेल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर

मूलीधाम में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराजकी परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनरायण मंदिर में बिरामजान ठाकुरजी का १४ वाँ वार्षिक उत्सव खूब खुशी से मनाया गया । पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ८-११-१९ से १४-११-१९ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण स.ुग. शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) के वक्तापद से पूर्ण हुई थी । जिसके यजमान प.भ. राजूभाई रकिसभाई चंदाराणा परिवार था।

व्याख्यानमाला के वक्ता स्वा. सत्संगसागरदाजी तथा

स्वा. त्यागवल्लभदासजीने भगवान श्रीहरि की महिमा बताये थे । इस अवसर पर तुलसी विवाह श्री रामप्रतापजी महाराज का विवाह रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम श्रीहरियज्ञ, ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आदि किया गया था । बहनो को दर्शन और आशीर्वाद देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे । तीर्थो से सांख्ययोगी बहने भी पधारी थी । पूरे सभा का संचालन शा. स्वा. प्रेमवल्लभदासजी तथा स्वा. नित्यप्रकाशदासजीने किया था । पूरा प्रबन्धकोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडलने किया था । इस अवसर पर सुरेन्द्रनगर तथा आस-पास के गाँवो से कई हरिभक्त भाग लिये थे । अन्य सेवा में पूजारी शांति स्वामी, भक्ति स्वामी और कनु भगत थे ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल (ता. चूडा) का ६ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराजकी परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शा. स्वा. ज्ञानवल्लभदासजी (लींबडी) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल का ६ वाँ पाटोत्सव कार्तिक सुद-७ ता. ३-११-१९ के दिन मनाया गया था । सत्संगि बहनो द्वारा बनाये गये सुंदर भोजन का अन्नकूट चढाया गया था । महंतश्री पू. ज्ञान स्वामी (लींबडी)ने ठाकुरजीकी आरती किये थे । और धर्मकुल की महिमा बताये थे । प्रत्येक भक्त प्रसाद के साथ कैलेन्डर दिया गया था । सभी ने महामंत्रकी धुन किये थे ।(कोठारी नरेन्द्रभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली श्री राधाकृष्णदेव हलवद विस्तार के श्री नरनारायणदेव के अधिकार के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिकृष्णधाम रणजीतगढ गाँव में ता. २९-१०-१९ से १-११-१९ तक स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से सत्त शिबिर का आयोजन किया गया था । जिस में संतो ने भगवान श्री स्वामिनारायण की सर्वोपरि महिमा और धर्मकुल की महिमा को समझाये थे । विश्वनंद स्वामी ने सभा का संचालन किये थे । सभी लोग देव का दर्शन कथा श्रवण करके प्रसाद पाकर धन्य हो गये ।(प्रति. अनिल दुधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेथाण का १९ वाँ पाटोत्सव मनाया

परमब्रह्म परमात्मा सर्वोपरि श्री भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्रीहरि के चरणो से अलौकिक तीर्थ भूमि श्री स्वामिनारायण मंदिर मेथाण का (भाईयो) का १९ वाँ पाटोत्सव विधिवत मनाया गया ।

इस अवसर पर मूली दाम स.गु. भक्तिहरि स्वामी संत मंडल के साथ आये थे । और ठाकुरजीका पाटोत्सव, अन्नकूट आरती, धुन, भजन, कीर्तन, कथा, वार्ता करके सभी हरिभक्त खुश हुए थे । पाटोत्सव के यजमान का लाभ प.भ. धनजीभाई पटेल परिवार ने लिया था । सभा संचालन एवम् सुंदर सेवा स्वामी विश्वनंदनदासज ने किया था । सभी लोग प्रसाद लेकर अपने घर गये थे । (प्रति. अनिल दूधरेजिया)

विदेश सत्संग समाचार

शिकागो इटास्का श्री स्वामिनारायण मंदिर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागोने विजया दशमी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४७ वाँ प्रागट्योत्सव और आसो सुद-१५ शरदोत्सव और (महिला दिवस) अच्छे से मनाया गया था । बहनो के लिये सेमीनार आयोजित किया गया था । जिसमें २०० जितने बाल युवति और महिला बहनो ने भाग लिया था । जिसमें मानसिक स्वास्थ्य, सत्संग, योगासन, महामंत्र, कीर्तन, सेवा, ध्यान और जीवन शैली जैसे विषयो पर संवाद किया गया था ।

दिवाली के उत्सव में श्री हनुमान चरित्र की कथा दिव्यप्रकाश स्वामीने सुनाया था । जिसकी पूर्णाहुति काली चौदस के दिन मारुति यज्ञ के साथ पूर्णाहुति थी । जिसमें हरिभक्त यजमान बनकर भाग लिये थे ।

नूतन वर्ष की मंगला आरती से शयन आरती तक हजारो हरिभक्तोने देव दर्शन कथा का लाभ लिये थे । प्रमुख जगदीशभाई पटेल सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री और पूरे धर्मकुल का आशीर्वाद सभा में चढकर सुनाये थे । ठाकुरजी का अलौकिक छप्पन भोग वाला अन्नकूट किया गया था ।

ठाकुरजी को नये वर्ष मं सुंदर परिधान पहनाया गया था । शा. स्वा. भक्तिनंदन स्वामी (जेतलपुर) ठाकुरजी के लिये नये सोने का कंदोरा की सूचना दी। हरिभक्त सहर्ष स्वीकार किये थे ।

कार्तिक मास में भव्य तुलसी विवाह मनाया गया था । तुलसी विवाह में वर पक्ष, कन्या पक्ष और मामा के पक्ष में हरिभक्तोने यजमान बनकर भाग लिया था ।

पूरे अवसर पर शा. भक्तिनंदन स्वामी (जेतलपुर), ब्र. के.पी. स्वामी (जेतलपुर) और दिव्यप्रकाश स्वामीने प्रेरणा दी थी । इसके बाद सभी हरिभक्त, युवक मंगलवदल, महिला मंडल, रसोई सभा, आदिने अच्छी सेवा प्रदान किये थे । सभी लोग दर्शन और प्रसाद लेकर धन्य हुए । (वसंत त्रिवेदी – शिकागो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन टेक्सास में दिवाली उत्सव हर्ष पूर्वक मनाया गया था ।

एकादशी के दिन शायं धुन, भजन, कीर्तन, लक्ष्मीपूजन, मारुती यज्ञ, सुंदर कांड, समूह चोपडा पूजन नये वर्ष का भव्य अन्नकूट दर्शन, ठाकुरजी के सामने १००० दीपक की रोशनी की गई थी । यहाँ के सुव्रत स्वामी द्वारा यजमान और मेहमानो का फूलहार से स्वागत किये थे । अनेक हरिभक्त ठाकुरजी का दर्शन करके धन्य धन्य हुए । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसप की छपैयाधाम

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पारसप मंदिर के महंत शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी की प्रेरणा से हमारे पारसीप के श्री स्वामिनारायण मंदिर में सुंदर भागवत कथा का आयोजन किया गया था । पोथीयात्रा धूमधाम से मनाई गई थी । वक्ता श्री शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी कथा में आने वाले दृश्य का साक्षात वर्णन करते थे । सभी यजमान की सेवा की प्रशंसा की गयी थी । बाहर के हरिभक्तो का सन्मान किया गया था । रसोई में सेवा देने वालो भक्तो की सराहना की गई थी । विशाल संख्या में हरिभक्त देव का दर्शन किये प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किये ।(प्रविणकुमार शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी अजयप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन में दिवाली के अवसर पर स्वामीजी कथा के द्वारा उत्सवो का महत्व बताये थे । लक्ष्मीपूजन, चोपडा पूजन और ठाकुरजी का भव्य अन्नकूट दर्शन हरिभक्तोने किया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा दिवाली के प्रत्येक प्रसंग को अच्छे से सम्पन्न किये थे । सभी सेवा देने वाले । भक्तो की प्रशंसा की गयी थी । मेहमानो का फूलहार से स्वागत किया गया था । रसोई, पार्किंग तथा अन्य कार्यो में सेवा देने वालो प्रशंसा की गई थी ।(शाह प्रविणभाई)

एलन टाउन श्री स्वामिनारायण मंदिर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत स्वामी धर्मकिशोरदासजी के मार्गदर्शन से दिवाली के सभी उत्सव मनाये गये थे । श्री लक्ष्मीपूजन, समूह चोपडा पूजन, काली चौदश को हनुमानजी की पूजा आरती, नये वर्ष में ठाकुरजी को छप्पन भोग अन्नकूट चढाया गया था ।

सम्पूर्ण उत्सव में कार्य करने वाले यजमानो का सन्मान किया गया था । मेहमानो का फूलहार से स्वागत किया गया था । स्थायी सेवा देने वाले एवम् रसोई में सेवा देने वालो का भी सन्मान किया गया था । महंत स्वामीने उत्सव की महिमा समझाये थे । आये सभी हरिभक्त दर्शन करके प्रसाद लेकर धन्य धन्य हो गये ।(प्रवीणभाई शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद(गुजरात)पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

1

2

3

૧. અમદાવાદ રંગમહોલ શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજના પાટોત્સવ પ્રસંગે અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તથા અભિષેક કરતા શા.સ્વામી નિર્ગુણદાસજી. ૨. કાલુપુર મંદિરમાં દેવપ્રબોધિની એકાદશીના સર્વોપરિ શ્રી નરનારાયણદેવની પાંચ આરતી કરવામાં આવી હતી તથા શ્રી નરનારાયણદેવ સમક્ષ આખી રાત્રી ઓચ્છવ કરવામાં આવ્યો હતો. ૩. ગાંધીનગર સેક્ટર-૨ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરના ૨૦મા પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા તથા સભામાં દર્શન આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી.

૧. ઝારાવડ નૂતન શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરની પ્રતિષ્ઠા નિમિત્તે સભામાં દર્શન આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી.
૨.અમદાવાદ મંદિરમાં સંત દિક્ષા આપી રહેલા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૩. મેથાણના મુવાડા ગામે પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૪. જેતલપુર આપણા મંદિરે ગુજરાત રાજ્યના મુખ્યમંત્રી દર્શને પધાર્યા તે સમયે ગંગામાના ઘર પર મહંત શા. સ્વામી આત્મપ્રકાશદાસજી સાથે. ૫. ન્યૂ રાણીપ મંદિરમાં અન્નકૂટ દર્શન.

१. ग्रीफीथ ओस्ट्रेलीया में नूतन मंदिर की खात विधि करते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री २. पर्थ मंदिर में शाकोत्सव करते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । ३. एडीलेड मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । ४. कालुपुर मंदिर हवेली मे बालिका शिबिर में पू. श्रीराजा के साथ लाभ उठाती बालिकाये । ५. धमासणा मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर शाकोत्सव करते प.पू. लालजी महाराजश्री । ६. "आचरण लीला" पुस्तिका का विमोचन करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

2

VACHANAMRUT
JAYANTI

3

१. डेरीमेट (मेलबोर्न ओस्ट्रेलीया) नूतन मंदिर मे मूर्ति प्रतिष्ठा करत हरिभक्त के साथ समूह आरती करते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

२. सीनेमिसन मंदिर में वचनामृत द्विशताब्दी के लिये कथा पारायण ।

३. शिकागो मंदिर में तुलसी विवाह ।

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in

Follow Us @ nndkalupurmandir

Daily Darshan Whatsapp no. **+91 9909 967104**